विषय-सूची

त्रिक -निपात (१-५)

१. प्रथम पंचाशतक

१. मूर्ख वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - - १०८
१. भय सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - - १०८
२. लक्षण सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १०८
३. चिंतन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १०९
४. अत्यय (दोष) सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १०९
५. अयथार्थ सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - ११०
६. अकु सल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - ११०
७. सावद्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १११
८. दुर्भाव सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १११
९. उच्छिन्नमूल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १११
१०. मल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - ११२
२. रथक ार वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - ११३
१. ज्ञात सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - ११३
२. स्मरणीय सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - ११३
३. आशा सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - ११४
४. चक्र वर्ती सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - ११६
५. सचेतन सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - ११७
६. अनुलोम मार्ग सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १२०
७. स्वक ष्ट सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १२१
८. देवलोक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १२१
९. वणिक सुत्त (प्रथम) - - - - - - - - - - - - - १२२
१०. वणिक सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - - १२३
३. पुद्गल वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - - १२४
१. समिद्ध सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १२४
२. ग्लान सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - - १२६
३. संस्क ार सुत्त- - - - - - - - - - - - - - - - - १२७
४. बहूपक ार सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १२८
५. वज्रोपम सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १२९
६. सेवितव्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १३०
७. जुगुप्सितव्य (घृणा क रने योग्य) सुत्त - - - - - - - - - १३१

८. गूथभाषी (विष्ठा) सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १३३
९. अंध सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १३४
१०. अवकु ब्ज (औंधा घड़ा) सुत्त - - - - - - - - - - - १३६
४. देवदूत वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - १३८
१. सब्रह्मक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १३८
२. आनन्द सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १३९
३. सारिपुत्त सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १४०
४. निदान सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १४१
५. हत्थक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १४३
६. देवदूत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १४४
७. चतुर्महाराज सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १४९
८. चतुर्महाराज सुत्त (द्वितीय) - - - - - - - - - - - १५१
९. सुकु मार सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १५१
१०. अधिपति सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १५४
५. चूळ वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - - - १५६
१. सन्मुखभाव सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १५६
२. त्रय स्थानिक सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १५७
३. ध्यातव्य सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १५७
४. क थाफ ल सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १५८
५. पंडित सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १५८
६. सीलवंत सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - - १५८
७. संस्कृ त-लक्षण सुत्त - - - - - - - - - - - - - - १५९
८. असंस्कृ त-लक्षण सुत्त - - - - - - - - - - - - - १५९
९. पर्वतराज सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १५९
१०. क ठोर प्रयत्न क रणीय सुत्त - - - - - - - - - - - १६०
११. महाचोर सुत्त - - - - - - - - - - - - - - - १६०

त्रिक निपात

१. प्रथम पंचाशतक

१. मूर्ख वर्ग

१. भय सुत्त

१. ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को संबोधित किया – "भिक्षुओ!" उन भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया – "भदंत!" भगवान ने कहा –"भिक्षुओ, जितने भी भय उत्पन्न होते हैं, वे मूर्ख से ही उत्पन्न होते हैं, पंडित से नहीं। जितने भी उपद्रव उत्पन्न होते हैं, वे मूर्ख से ही उत्पन्न होते हैं, पंडित से नहीं। जितने भी उपसर्ग (खतरे) उत्पन्न होते हैं, वे मूर्ख से ही उत्पन्न होते हैं, पंडित से नहीं।

"भिक्षुओ, जैसे सरकंडों के घर में वा फूस के घर में लगी हुई आग लिपे-पुते, निर्वात (हवा रहित), अर्गलों वाले, बंद खिड़कियोंवाले कूटागारों को भी जला डालती है, उसी प्रकार भिक्षुओ, जितने भी भय उत्पन्न होते हैं, वे मूर्ख से ही उत्पन्न होते हैं, पंडित से नहीं। जितने भी उपद्रव उत्पन्न होते हैं, वे मूर्ख से ही उत्पन्न होते हैं, पंडित से नहीं। जितने भी उपसर्ग उत्पन्न होते हैं, वे मूर्ख से ही उत्पन्न होते हैं, पंडित से नहीं।

"भिक्षुओ, इस प्रकार मूर्ख सभय होता है, पंडित निर्भय होता है, मूर्ख स-उपद्रव होता है, पंडित उपद्रव-रहित होता है, मूर्ख स-उपसर्ग होता है, पंडित उपसर्ग-रहित होता है। भिक्षुओ, पंडित से भय नहीं है, पंडित से उपद्रव नहीं है, पंडित से उपसर्ग नहीं है।

"इस कारण ठीक इसी प्रकार भिक्षुओ, सीखना चाहिए –जिन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति मूर्ख समझा जाता है उन तीन धर्मों को त्यागकर तथा जिन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति पंडित समझा जाता है उन तीन धर्मों से समन्वित होकर रहेंगे। ठीक इस प्रकार भिक्षुओ, तुम्हें सीखना चाहिए।"

२. लक्षण सुत्त

२. "कर्म ही मूर्ख का लक्षण है (अर्थात, कर्म से ही मूर्ख पहचाना जाता है)। भिक्षुओ, कर्म ही पंडित का लक्षण है (अर्थात, कर्म से ही पंडित पहचाना जाता है)। प्रज्ञा चरित्र से ही शोभायमान होती है।

"भिक्षुओ, इन तीन बातों से युक्त व्यक्ति को मूर्ख समझना चाहिए। किन तीन बातों से? कायिक-दुश्चरित से, वाचिक-दुश्चरित से तथा मानसिक-दुश्चरित से। भिक्षुओ, इन तीन बातों से युक्त व्यक्ति को मूर्ख जानना चाहिए।

"भिक्षुओ, इन तीन बातों से युक्त व्यक्ति को पंडित समझना चाहिए। किन तीन बातों से? कायिक-सुचरित से, वाचिक-सुचरित से तथा मानसिक-सुचरित से। भिक्षुओ, इन तीन बातों से युक्त व्यक्ति को पंडित जानना चाहिए।

"इस कारण ठीक इसी प्रकार भिक्षुओ, सीखना चाहिए –जिन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति मूर्ख समझा जाता है उन तीन धर्मों का त्यागकर तथा जिन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति पंडित समझा जाता है उन तीन धर्मों से समन्वित होकर रहेंगे। ठीक इस प्रकार भिक्षुओ, तुम्हें सीखना चाहिए।"

३. चिंतन सुत्त

३. "भिक्षुओ, मूर्ख के ये तीन लक्षण, निमित्त, चिह्न हैं। कौन-से तीन? भिक्षुओ, मूर्ख बुरे विचार रखता है, बुरी वाणी बोलता है, बुरे कर्म करता है। भिक्षुओ, यदि मूर्ख बुरे विचार न रखे, बुरी वाणी न बोले, बुरे कर्म न करे, तो पंडित-लोग यह कैसे जानेंगे कि यह महाशय असत्पुरुष हैं, मूर्ख हैं। क्योंकि भिक्षुओ, मूर्ख बुरे विचार रखता है, बुरी वाणी बोलता है, बुरे कर्म करता है, इसीलिए पंडित-लोग जान लेते हैं कि यह महाशय असत्पुरुष हैं, मूर्ख हैं। भिक्षुओ, ये तीन मूर्ख के लक्षण, निमित्त, चिह्न हैं।"

"भिक्षुओ, पंडित के ये तीन लक्षण, निमित्त, चिह्न हैं। कौन-से तीन?

"भिक्षुओ, पंडित अच्छे विचार रखता है, अच्छी वाणी बोलता है, अच्छे कर्म करता है। भिक्षुओ, यदि पंडित अच्छे विचार न रखे, अच्छी वाणी न बोले, अच्छे कर्म न करे तो पंडित लोग कैसे जानेंगे कि यह सत्पुरुष हैं, पंडित हैं। क्योंकि भिक्षुओ, पंडित अच्छे विचार रखता है, अच्छी वाणी बोलता है, अच्छे कर्म करता है, इसीलिए पंडित-लोग जान लेते हैं कि यह सत्पुरुष हैं, पंडित हैं। भिक्षुओ, ये तीन पंडित के लक्षण, निमित्त, चिह्न हैं। इसलिए ठीक इसी प्रकार भिक्षुओ, तुम्हें... सीखना चाहिए।"

४. अत्यय (दोष) सुत्त

४. "भिक्षुओ, तीन धर्मों (बातों) से युक्त को मूर्ख जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"वह अपने 'दोष' को 'दोष' करके नहीं देखता, 'दोष' को 'दोष' करके देखकर वह उसका 'प्रतिकर्म' नहीं करता, यदि कोई दूसरा अपना 'दोष' स्वीकार करे तो वह उसे धर्मानुसार क्षमा नहीं करता। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त को मूर्ख जानना चाहिए। इसलिए ठीक इसी प्रकार... सीखना चाहिए।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को पंडित समझना चाहिए। कौन-से तीन से?

"वह अपने 'दोष' को 'दोष' करके देखता है, 'दोष' को 'दोष' करके देखकर वह उसका 'प्रतिकर्म' करता है, यदि कोई दूसरा अपना 'दोष' स्वीकार करे तो वह उसे धर्मानुसार क्षमा करता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त को पंडित जानना चाहिए। इसलिए ठीक इसी प्रकार... सीखना चाहिए।"

५. अयथार्थ सुत्त

५. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'मूर्ख' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"गलत ढंग से प्रश्न पूछने वाला होता है, गलत ढंग से प्रश्न का उत्तर देने वाला होता है, दूसरे के समग्र रूप से, परिमार्जित भाषा में, सुसंगत उत्तर दिये जाने पर भी अनुमोदन करने वाला नहीं होता। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त को 'मूर्ख' जानना चाहिए।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"उचित ढंग से प्रश्न पूछने वाला होता है, उचित ढंग से प्रश्न का उत्तर देने वाला होता है, दूसरे के समग्र रूप से, परिमार्जित भाषा में, सुसंगत उत्तर दिये जाने पर अनुमोदन करने वाला होता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए। इसलिए ठीक इसी प्रकार... सीखना चाहिए।"

६. अकुसल सुत्त

६. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'मूर्ख' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"अकुशल कायिक-कर्म से, अकुशल वाचिक-कर्म से, तथा अकुशल मानसिक-कर्म से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त 'मूर्ख' होता है।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए। कौन-से तीन?

"कुशल कायिक-कर्मसे, कुशल वाचिक-कर्मसे, कुशल मानसिक-कर्मसे। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए। इसलिए ठीक इसी प्रकार... सीखना चाहिए।"

७. सावद्य सुत्त

७. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'मूर्ख' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"सदोष (सावद्य) कायिक-कर्मसे, सदोष वाचिक-कर्मसे, सदोष मानसिक-कर्मसे युक्त...।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"निर्दोष (अनवद्य) कायिक-कर्मसे, निर्दोष वाचिक-कर्मसे, निर्दोष मानसिक-कर्मसे...। इसलिए ठीक इसी प्रकार... सीखना चाहिए।"

८. दुर्भाव सुत्त

८. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'मूर्ख' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"दुर्भावपूर्ण कायिक-कर्मसे... दुर्भावपूर्ण मानसिक-कर्मसे...।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए। कौन-से तीन से?

"सद्भावपूर्ण कायिक-कर्मसे... सद्भावपूर्ण मानसिक-कर्मसे...।

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त को 'पंडित' जानना चाहिए।

"इसलिए ठीक इसीप्रकारभिक्षुओ, सीखना चाहिए – जिन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति मूर्ख समझा जाता है उन तीन धर्मों का त्यागकर तथा जिन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति पंडित समझा जाता है उन तीन धर्मों से समन्वित होकर रहेंगे।

"ठीक इसी प्रकार भिक्षुओ, तुम्हें सीखना चाहिए।"

९. उच्छिन्नमूल सुत्त

९. "भिक्षुओ, इन तीन धर्मों (बातों) से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष, मूल समेत उखाड़ दिये के समान (उच्छिन्नमूल), सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष

होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है। कौन-से तीन से?

"कायिकदुराचरण से, वाचिक दुराचरण से तथा मानसिक दुराचरण से।"

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त मूर्ख, अव्यक्त, असत्पुरुष, मूल समेत उखाड़ दिये के समान, सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ-पुरुषों द्वारा निंदनीय होता है और बहुत अपुण्य कमाता है।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष, मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है, विज्ञ-पुरुषों द्वारा प्रशंसनीय होता है और बहुत पुण्य कमाता है। कौन-से तीन से?

"कायिकसदाचरण से, वाचिक सदाचरण से, तथा मानसिक सदाचरण से।

"भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त पंडित, व्यक्त, सत्पुरुष मूल समेत उखाड़ दिये के समान न होकर सत्त्वयुक्त हो विचरता है (अर्थात सम्यक-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), गुणी होता है, निर्दोष होता है और बहुत पुण्य कमाता है।"

१०. मल सुत्त

१०. "भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति बिना तीन मलों का त्याग किये नरकमें डाल दिये गये के समान होता है। कौन-से तीन से?

"दुश्शील होता है, तथा उसका दुःशील-मल अप्रहीण होता है; ईर्ष्यालु होता है तथा उसका ईर्ष्या-मल अप्रहीण होता है, मात्सर्य-युक्त होता है तथा उसका मात्सर्य-मल अप्रहीण होता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त बिना तीन मलों का त्याग किये नरकमें डाल दिये गये के समान होता है।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति तीन मलों का त्याग कर स्वर्ग में डाल दिये गये के समान होता है। कौन-से तीन से?

"सदाचारी होता है और इसका दुराचार-रूपी मल प्रहीण होता है, ईर्ष्या-रहित होता है और इसका ईर्ष्यारूपी मल प्रहीण होता है, मात्सर्य-रहित होता है और इसका मात्सर्यरूपी मल प्रहीण होता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त व्यक्ति तीन मलों का त्याग कर स्वर्ग में डाल दिये गये के समान होता है।"

* * * * *

२. रथकार वर्ग

१. ज्ञात सुत्त

११. "भिक्षुओ, तीन धर्मों (बातों) से युक्त (ज्ञात) प्रसिद्ध भिक्षु बहुत जनों के अहित का कारण होता है, बहुत जनों के असुख का कारण होता है, बहुत जनों के अनर्थ तथा अहित का कारण होता है, और देव-मनुष्यों के दुःख का कारण होता है। कौन-से तीन से?

"प्रतिकूल कायिक-कर्म करने के लिए (दूसरे को) प्रेरित करता है, प्रतिकूल वाचिक-कर्म करने के लिए प्रेरित करता है, प्रतिकूल मानसिक-कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्रसिद्ध भिक्षु बहुत जनों के अहित का कारण होता है, बहुत जनों के असुख का कारण होता है, बहुत जनों के अनर्थ तथा अहित का कारण होता है और देव-मनुष्यों के दुःख का कारण होता है।

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से युक्त प्रसिद्ध भिक्षु बहुत जनों के हित का कारण होता है, बहुत जनों के सुख का कारण होता है, बहुत जनों के अर्थ तथा हित का कारण होता है और देव-मनुष्यों के सुख का कारण होता है। कौन-से तीन से?

"अनुकूल कायिक-कर्म करता है, अनुकूल वाचिक-कर्म करता है, अनुकूल मानसिक-कर्म करता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त प्रसिद्ध भिक्षु बहुत जनों के हित का कारण होता है, बहुत जनों के सुख का कारण होता है, बहुत जनों के अर्थ तथा हित का कारण होता है और देव-मनुष्यों के सुख का कारण होता है।"

२. स्मरणीय सुत्त

१२. "भिक्षुओ, ये तीन बातें मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्मभर याद रहती हैं। कौन-सी तीन?

"भिक्षुओ, जिस जगह मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा जन्म ग्रहण करता है, भिक्षुओ, यह पहली बात है जो मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्मभर याद रहती है।

"फिर भिक्षुओ, जिस जगह मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा का राज्याभिषेक होता है, भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्मभर याद रहती है।

"फिर भिक्षुओ, जिस जगह मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा संग्राम जीत कर, विजयी होकर, विजय के उसी स्थान पर रहता है, भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्मभर याद रहती है।

"भिक्षुओ, ये तीन बातें मूर्धाभिषिक्त क्षत्रिय राजा को जन्मभर याद रहती हैं। इसी प्रकार भिक्षुओ, ये तीन बातें भिक्षु को जन्मभर याद रहती हैं। कौन-सी तीन?

"भिक्षुओ, जिस जगह भिक्षु बाल-दाढ़ी मुँड़वा, काषाय वस्त्र पहन, घर से बे-घर हो प्रव्रजित होता है, भिक्षुओ, यह पहली बात है जो भिक्षु को जन्मभर याद रहती है।

"फिर भिक्षुओ, जिस जगह भिक्षु 'यह दुःख है', इसे यथाभूत जान लेता है, 'यह दुःख-समुदय है', इसे यथाभूत जान लेता है, 'यह दुःख-निरोध है', इसे यथाभूत जान लेता है, 'यह दुःख-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा है', इसे यथाभूत जान लेता है, भिक्षुओ, यह दूसरी बात है जो भिक्षु को जन्मभर याद रहती है।

"फिर भिक्षुओ, जिस जगह भिक्षु आस्रवों का क्षय करके, अनास्रव चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जीवन में स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है, भिक्षुओ, यह तीसरी बात है जो भिक्षु को जन्मभर याद रहती है।

"भिक्षुओ, ये तीन बातें भिक्षु को जन्मभर याद रहती हैं।"

३. आशा सुत्त

१३. "भिक्षुओ, लोक में तीन तरह के व्यक्ति हैं। कौन-से तीन?

"निराश (शून्याश), आशावान तथा पूर्णाश (आशापूर्ण)।[१]

१ पालि में यहां **'निरासो'**, **'आसंसो'** तथा **'विगतासो'** है। इनका अनुवाद क्रमशः निराश, आशावान तथा आशापूर्ण किया जाता है। यहां **'निरासो'** का अर्थ उस व्यक्ति से है जिसके मन में कोई आशा ही नहीं जगती। हिंदी में 'निराश' का अर्थ है जिसकी आशा ही पूरी नहीं हुई। इसका दूसरा अर्थ आशा रहित होना भी है, पर इस अर्थ में इसका प्रयोग हिंदी में बहुधा नहीं होता। लेकिन यहां **'निरासो'** से तात्पर्य वैसे व्यक्ति से नहीं है जिसकी आशा पूरी नहीं हुई, बल्कि वैसे व्यक्ति से है जिसके मन में कोई आशा ही नहीं जगती। 'जिसको कोई आशा ही नहीं' या 'जिसकी आशा पूरी नहीं हुई' में जिस तरह का अंतर है, वही अंतर 'शून्याश' और 'निराश' में है। यद्यपि बृहत हिंदी शब्द कोश में 'शून्याश' शब्द नहीं है, पर हिंदी में इस तरह का शब्द गढ़ा जाना चाहिए ताकि वह समृद्ध हो सके। 'शून्याश' जिस मानसिक स्थिति का बोध कराता है वह 'निराश' बोध नहीं कराता। 'विगतास' का पूर्णाश किया गया है जो 'बृहत हिंदी कोश' में है। इसी के अनुरूप 'शून्याश' गढ़ा गया है।

"भिक्षुओ, निराश व्यक्ति किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक व्यक्ति नीच-कुल में जन्म ग्रहण करता है, दरिद्र-कुल में जन्म ग्रहण करता है, अल्प खाद्य-पेय कुल में, दुर्जीविका-कुल में, जहां कठिनाई से खाना-पीना मिलता है जैसे चंडाल कुल में, शिकारियों के कुल में, बंस-फोड़ों के कुल में, रथकार के कुल में, मैला साफ करनेवालों के कुल में। वह दुर्वर्ण होता है, दुर्दर्शनीय, बौना, रोग-बहुल, काना, लूला, लंगड़ा वा पक्षाघात हुआ हुआ। उसे न अन्न-पान मिलता है, न वस्त्र मिलता है, न सवारी मिलती है, न माला-गंध-विलेपन मिलता है, न शय्या मिलती है, न निवासस्थान मिलता है और न प्रदीप मिलता है। वह सुनता है कि अमुक नाम के क्षत्रिय का क्षत्रियों द्वारा राज्याभिषेक हुआ है। उसके मन में यह नहीं होता कि मुझे भी, क्षत्रिय कब क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त करेंगे –भिक्षुओ, ऐसा (व्यक्ति) निराश (शून्याश) व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, आशावान व्यक्ति किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, राज्याभिषिक्त, क्षत्रिय राजा का ज्येष्ठ पुत्र होता है, अभिषेकार्ह, अनभिषिक्त, वयः-प्राप्त। वह सुनता है अमुक नाम का क्षत्रिय क्षत्रियों द्वारा क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त हुआ है। उसके मन में यह होता है कि क्षत्रिय मुझे भी कब क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त करेंगे? भिक्षुओ, ऐसा (व्यक्ति) आशावान व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, पूर्णाश व्यक्ति किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, राज्याभिषिक्त क्षत्रिय राजा होता है। वह सुनता है कि अमुक नाम का क्षत्रिय क्षत्रियों द्वारा क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त हुआ है। उसके मन में यह नहीं होता कि मुझे भी क्षत्रिय कब क्षत्रियाभिषेक से अभिषिक्त करेंगे। यह किसलिए? भिक्षुओ, अभिषेक से पूर्व की इसकी अभिषिक्त होने की आशा पूरी हो चुकी है। भिक्षुओ, ऐसा (व्यक्ति) पूर्णाश व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, इस लोक में ये तीन प्रकार के व्यक्तिहैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, भिक्षुओं में भी तीन प्रकार के भिक्षु हैं। कौन-से तीन?

"निराश (शून्याश), आशावान तथा पूर्णाश।

"भिक्षुओ, निराश भिक्षु किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक भिक्षु दुःशील होता है, पापी, अपवित्र, सशंकित आचरण वाला, प्रच्छन्नकर्मी (छिपकर दुष्कर्म करनेवाला), श्रमण न होने पर भी श्रमण

होने का दावा करने वाला, ब्रह्मचारी न होते हुए भी ब्रह्मचारी होने का दावा करने वाला, भीतर से सड़ा हुआ, स्रावयुक्त, कूड़े के ढेर जैसा। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवों का क्षय करके ,अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जीवन में स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। उसके मन में यह नहीं होता – मैं भी कब आस्रवों का क्षय कर, अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमोक्ष को इसी जीवन में स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करूंगा। भिक्षुओ, ऐसा (भिक्षु) निराश भिक्षु कहलाता है।

"भिक्षुओ, आशावान भिक्षु किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, भिक्षु सदाचारी होता है कल्याणधर्मी।वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवों का क्षय करके ,अनास्रव चित्त-विमुक्ति, प्रज्ञा-विमुक्ति को इसी जीवन में स्वयं जानकर,साक्षात कर,प्राप्त कर विहार करता है। उसके मन में यह होता है – मैं भी कब आस्रवों का क्षय कर... विहार करूंगा।

"भिक्षुओ, ऐसा (भिक्षु) आशावान भिक्षु कहलाता है।

"भिक्षुओ, पूर्णाश भिक्षु किसे कहते हैं?

"भिक्षुओ, एक (भिक्षु) क्षीणास्रव अर्हत होता है। वह सुनता है कि अमुक भिक्षु आस्रवों का क्षय कर...विहार करता है। उसके मन में यह नहीं होता –मैं भी कब आस्रवों का क्षय कर...विहार करूंगा।यह किसलिए?भिक्षुओ, मुक्त होने से पूर्व की इसकी मुक्त होने की आशा शांत हो चुकी है।

"भिक्षुओ, ऐसा (भिक्षु) पूर्णाश भिक्षु कहलाता है। भिक्षुओ, भिक्षुओं में ये तीन प्रकार के भिक्षु हैं।"

४. चक्र वर्ती सुत्त

१४. "भिक्षुओ, जो चक्र वर्ती, धार्मिक, धर्म-राजा होता है, वह भी राजाविहीन होकर चक्र वर्तीराज्य नहीं करता।"

ऐसा कहने पर एक भिक्षु ने भगवान से यह कहा –"भंते, धार्मिक चक्र वर्ती, धर्म-राजा का राजा कौन?"

"भिक्षु! धर्म ही राजा है।" भगवान ने कहा –

"यहां भिक्षु! धार्मिक चक्र वर्ती, धर्म-राजा, धर्म के ही लिए, धर्म का सत्कार करते हुए, धर्म के प्रति गौरव प्रदर्शित करते हुए, धर्म की पूजा करते हुए, धर्म-ध्वज, धर्म-केतु, धर्माधिपत्य, जनता की धर्मानुकूल सुरक्षा की व्यवस्था करता है।

"यहां भिक्षु! और फिर, धार्मिक चक्रवर्ती, धर्म-राजा, धर्म के ही लिए, धर्म का सत्कार करते हुए, धर्म के प्रति गौरव प्रदर्शित करते हुए, धर्म की पूजा करते हुए, धर्म-ध्वज, धर्म-केतु, धर्माधिपत्य, क्षत्रियों की, अनुगामी क्षत्रियों की, सेना की, ब्राह्मण-गृहपतियों की, निगम-जनपद के लोगों की, श्रमण-ब्राह्मणों की तथा पशु-पक्षियों की धर्मानुकूल सुरक्षा की व्यवस्था करता है।

"हे भिक्षु! वह धार्मिक राजा चक्रवर्ती... धार्मिक सुरक्षा की व्यवस्था करके ...क्षत्रियों की... पशु-पक्षियों की, रक्षा के लिए धर्मानुसार ही (राज्य-) चक्र का प्रवर्तन करता है। वह चक्र किसी अन्य मनुष्य द्वारा, किसी शत्रु द्वारा, या किसी प्राणी द्वारा उल्टा घुमाया नहीं जा सकता[1]।

"इसी प्रकार हे भिक्षु! सम्यक संबुद्ध अर्हत, तथागत धार्मिक, धर्म-राजा, धर्म के ही लिए, धर्म का सत्कार करते हुए, धर्म के प्रति गौरव प्रदर्शित करते हुए, धर्म की पूजा करते हुए, धर्म-ध्वज, धर्म-केतु, धर्माधिपत्य, कायिक-कर्म के प्रति धार्मिक पहरेदारी की व्यवस्था करते हैं – इस प्रकार का कायिक-कर्म करना चाहिए, इस प्रकार का कायिक-कर्म नहीं करना चाहिए।

"और फिर भिक्षु! सम्यक संबुद्ध अर्हत, तथागत धार्मिक, धर्म-राजा, धर्म के ही लिए, धर्म का सत्कार करते हुए, धर्म के प्रति गौरव प्रदर्शित करते हुए, धर्म की पूजा करते हुए, धर्म-ध्वज, धर्म-केतु, धर्माधिपत्य वाचिक-कर्म के प्रति... वाचिक-कर्म करना चाहिए, इस प्रकार का वाचिक-कर्म नहीं करना चाहिए। ...मानसिक-कर्म करना चाहिए, इस प्रकार का मानसिक-कर्म नहीं करना चाहिए।

"हे भिक्षु! वह सम्यक संबुद्ध अर्हत, तथागत, धार्मिक, धर्म-राजा... धर्माधिपत्य पहरेदारी की व्यवस्था कर धर्म से ही अनुत्तर (श्रेष्ठ) धर्म-चक्र का प्रवर्तन करता है। उस धर्म-चक्र को लोक में न कोई दूसरा श्रमण, न कोई ब्राह्मण, न देव, न मार, न ब्रह्मा और न कोई और अप्रवर्तित कर सकता है।"

५. सचेतन सुत्त

१५. एक समय भगवान वाराणसी में ऋषिपतन मृगदाय में विहार कर रहे थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को संबोधित किया –

"भिक्षुओ!"

---

१ पालि के **'अप्पटिवत्तियं'** का अर्थ होता है 'जो उल्टा घुमाया नहीं जा सकता' अर्थात जब धर्म-चक्र प्रवर्त्तन होता है तब उसे कोई उल्टा नहीं घुमा सकता। धर्मचक्र प्रवर्त्तित करना तो बड़ी बात है, उस प्रवर्त्तित धर्म-चक्र को कोई उल्टा भी नहीं घुमा सकता।

"भदंत !" कह उन भिक्षुओं ने भगवान को प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ! पूर्व समय में सचेतन नाम का राजा हुआ था। भिक्षुओ! तब राजा सचेतन ने रथकार को बुलाकर कहा –

'सौम्य रथकार! छः महीनों के बाद संग्राम होगा। क्या तू इस बीच (रथ के) पहियों की नयी जोड़ी बना सकेगा?

"भिक्षुओ, रथकार ने सचेतन राजा को प्रत्युत्तर दिया –

'बना सकूंगा।'

"तब भिक्षुओ, रथकार ने छः दिन कम छः महीने में एक पहिया बनाया। तब भिक्षुओ, राजा सचेतन ने रथकार को संबोधित किया –

'सौम्य रथकार! आज से छः दिन के बाद संग्राम होगा, नये पहियों की जोड़ी बनकर तैयार हुई?

'देव! इन छः दिन कम छः महीनों में एक पहिया बन कर तैयार हुआ है।'

'सौम्य! इन छः दिनों में दूसरा एक पहिया बना सकोगे?

"भिक्षुओ, रथकार ने सचेतन राजा को उत्तर दिया –

'देव! बना सकूंगा।'

"तब भिक्षुओ, रथकार ने छः दिनों में दूसरा पहिया तैयार किया और इन पहियों की नयी जोड़ी को लेकर राजा सचेतन के पास गया। जाकर उसने राजा सचेतन को यह कहा –

'देव! यह आपकी पहियों की जोड़ी तैयार है।'

'सौम्य रथकार! यह जो एक पहिया तूने छः दिन कम छः महीनों में तैयार किया, और यह जो दूसरा पहिया छः दिनों में तैयार किया, इन दोनों में क्या अंतर है? मैं इन दोनों में कोई भेद नहीं देखता।'

'देव! इन दोनों में अंतर है। देव! इन दोनों का अंतर देखें।'

"भिक्षुओ, तब रथकार ने छः दिन में बने हुए पहिये को प्रवर्तित किया। प्रवर्तित किया हुआ वह पहिया जितनी जोर से धकेला गया था उस जोर के समाप्त होते ही चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़ा। तब उसने जो पहिया छः दिन कम छः महीने में बनाया था उसे प्रवर्तित किया। प्रवर्तित किया हुआ वह पहिया जितने जोर से धकेला गया था उस जोर की गति के अनुसार जाकर मानो धुरी पर स्थित की तरह खड़ा हो गया।

'सौम्य रथकार! इसका क्या हेतु है, क्या कारण है कि जो यह छः दिन में बना हुआ पहिया है वह जितने जोर से प्रवर्तित किया गया था, उस जोर के समाप्त होते ही चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़ा, और जो पहिया छः दिन कम छः महीने में तैयार हुआ वह पहिया जितने जोर से प्रवर्तित किया गया था उस जोर के अनुसार जाकर धुरी पर स्थित की तरह खड़ा हो गया?'

'देव! जो यह पहिया छः दिनों में बनकर समाप्त हुआ है उसकी नेमि भी टेढ़ी है, सदोष है, कसर-सहित (त्रुटिपूर्ण है) है, उसके आरे भी टेढ़े हैं, सदोष हैं, कसर-सहित हैं, उसकी नाभि भी टेढ़ी है, सदोष है, कसर-सहित है। उसकी नेमि के भी टेढ़े, सदोष, तथा कसर-सहित होने से, उसके आरों के भी टेढ़े, सदोष तथा कसर-सहित होने से, उसकी नाभि भी टेढ़ी, सदोष तथा कसर-सहित होने से वह पहिया जितने जोर से प्रवर्तित किया गया था उस जोर के समाप्त होते ही चक्कर खा कर जमीन पर गिर पड़ा। और देव! यह जो पहिया छः दिन कम छः महीने में तैयार हुआ उसकी नेमि भी सीधी है, निर्दोष है, कसर-रहित है, उसके आरे भी सीधे हैं, निर्दोष हैं, कसर-रहित हैं, उसकी नाभि भी सीधी है, निर्दोष है तथा कसर-रहित है। उसकी नेमि के भी सीधे, निर्दोष तथा कसर-रहित होने से, उसके आरों के भी सीधे, निर्दोष तथा कसर-रहित होने से, उसकी नाभि के भी सीधे, निर्दोष तथा कसर-रहित होने से यह जो पहिया छः दिन कम छः महीने में तैयार हुआ वह पहिया जितने जोर से प्रवर्तित किया गया था उस जोर के अनुसार मानो धुरी पर स्थित की तरह खड़ा हो गया।'

"भिक्षुओ, संभव है कि तुम यह सोचो कि वह रथकार कोई दूसरा ही था। भिक्षुओ, यह बात इस प्रकार नहीं समझनी चाहिए। मैं ही उस समय वह रथकार था। उस समय मैं लकड़ी के टेढ़ेपन, दोष, लकड़ी की कसरें दूर करने में कुशल था। इस समय भिक्षुओ, मैं अर्हत सम्यक संबुद्ध, शरीर, मन तथा वाणी के टेढ़ेपन, दोष और कसरों को दूर करने में कुशल हूं।

"भिक्षुओ, जिस किसी भिक्षु वा भिक्षुणी के शरीर, वाणी तथा मन का टेढ़ापन, दोष तथा कसर दूर नहीं हुई है वे इस धर्म-विनय से उसी प्रकार गिरे हैं जैसे वह छः दिनों में बना हुआ पहिया।

"भिक्षुओ, जिस किसी भिक्षु या भिक्षुणी के शरीर, वाणी तथा मन का टेढ़ापन, दोष तथा कसर दूर हो गई है, भिक्षुओ, वे भिक्षु तथा भिक्षुणियां इस धर्म-विनय में उसी प्रकार प्रतिष्ठित हैं जैसे छः दिन कम छः महीने में बना हुआ पहिया।

"इसलिए ठीक इसी प्रकार भिक्षुओ, सीखना चाहिए: शरीर, वाणी तथा मन के टेढ़ेपन, दोषों और कसरों का त्याग करेंगे। भिक्षुओ, तुम्हें ऐसा ही सीखना चाहिए।"

६. अनुलोम मार्ग सुत्त

१६. "भिक्षुओ, तीन धर्मों (बातों) से युक्त भिक्षु अनुलोम-प्रतिपदा (मार्ग) का अनुगामी होता है और यह उसके आस्रवों के क्षय का आधार है। कौन-से तीन से?

"भिक्षुओ, यहां भिक्षु इंद्रियों को संयत रखता है, भोजन में मात्रज्ञ होता है, जागरूक रहने में लगा हुआ रहता है।

"भिक्षुओ, इंद्रियों को किस प्रकार संयत रखता है?

"भिक्षुओ, यहां भिक्षु चक्षु से रूप देखकर न उसके निमित्त[1] को ग्रहण करता है और न उसके अनुव्यंजन[2] को। जिस चक्षु-इंद्रिय के असंयत रहने से लोभ-दौर्मनस्य आदि पापी अकुशल धर्मों की उत्पत्ति हो सकती है, उसका संवर करने का प्रयत्न करता है, चक्षु-इंद्रिय की रक्षा करता है, चक्षु-इंद्रिय पर नियंत्रण प्राप्त करता है – श्रोत्र से शब्द सुन कर... घ्राण से गंध सूंघ कर... जिव्हा से रस चख कर... काय से स्पर्श कर... तथा मन से धर्म का ग्रहण कर न उनके निमित्त को ग्रहण करता है और न उनके अनुव्यंजन को, जिस मन-इंद्रिय के असंयत रहने से लोभ-दौर्मनस्य आदि पापी अकुशल-धर्मों की उत्पत्ति हो सकती है, उसका संवर करने का प्रयत्न करता है, मन-इंद्रिय की रक्षा करता है, मन-इंद्रिय पर नियंत्रण प्राप्त करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु इंद्रियों पर नियंत्रण प्राप्त करता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु भोजन में कैसे मात्रज्ञ होता है?

"भिक्षुओ, यहां भिक्षु ज्ञानपूर्वक ठीक से आहार ग्रहण करता है, न क्रीड़ा के लिए, न मद के लिए, न शरीर को मंडित करने के लिए और न विभूषित करने के लिए; बल्कि उतना ही जिससे इस काया की स्थिति बनी रहे, भूख के कारण जो दर्द हो उससे उपरत (विरत) रहने के लिए तथा ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने के लिए ताकि पुरानी वेदना को दूर करें, नयी वेदना की उत्पत्ति न हो, और 'मेरी' (जीवन) यात्रा निर्दोष तथा सुखपूर्वक हो। इस प्रकार, भिक्षुओ, भिक्षु भोजन के विषय में मात्रज्ञ होता है।

---

१ **निमित्त** – स्त्री और पुरुष का रूप या आकृति एक दूसरे के लिए **'निमित्त'** है।

२ उनकी आँखें, नाक तथा बोलने या हँसने का तरीका अनुव्यंजन हैं। निमित्त के विस्तार में जाना अनुव्यंजन है।

"भिक्षुओ, भिक्षु जागरूक रहने में कैसे लगा रहता है?

"भिक्षुओ, यहां भिक्षु दिन में चंक्रमण करता रह कर अथवा बैठा रह कर आवरण (नीवरण) धर्मों को दूर कर चित्त को परिशुद्ध करता है, रात के प्रथम प्रहर में चंक्रमण करता हुआ अथवा बैठा रह कर आवरण धर्मों को दूर कर चित्त को परिशुद्ध करता है, रात्रि के मध्यम प्रहर में पैर पर पैर रखकर दाहिनी करवट सिंह-शैय्या में लेटता है, स्मृतिमान और संप्रज्ञानी हो, उठने के संकल्प को मन में जगह देकर, रात्रि के पिछले प्रहर में उठकर चंक्रमण करता हुआ अथवा बैठा हुआ आवरण धर्मों को दूर कर चित्त को परिशुद्ध करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु जागरूक रहने में लगा हुआ रहता है। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से युक्त भिक्षु अनुलोम-प्रतिपदा का अनुगामी होता है और उसका जन्म आस्रवों के क्षय में लगा होता है।"

७. स्वकष्ट सुत्त

१७. "भिक्षुओ, इन तीन धर्मों (बातों) से स्वयं को भी कष्ट होता है, दूसरों को भी कष्ट होता है तथा दोनों को भी कष्ट होता है। कौन-से तीन धर्मों से?

"कायिक-दुश्चरित्रता से, वाचिक-दुश्चरित्रता से तथा मानसिक-दुश्चरित्रता से। भिक्षुओ, इन तीन बातों से स्वयं को भी कष्ट होता है, दूसरों को भी कष्ट होता है तथा दोनों को भी कष्ट होता है।"

"भिक्षुओ, तीन धर्मों से न स्वयं को भी कष्ट होता है, न दूसरों को भी कष्ट होता है और न दोनों को भी कष्ट होता है। कौन-से तीन?

"कायिक-सुचरित्रता से, वाचिक-सुचरित्रता से तथा मानसिक-सुचरित्रता से। भिक्षुओ, इन तीन धर्मों से न स्वयं को भी कष्ट होता है, न दूसरों को भी कष्ट होता है और न दोनों को भी कष्ट होता है।"

८. देवलोक सुत्त

१८. "भिक्षुओ, यदि अन्य मतों के परिव्राजक तुम्हें यह पूछें – आयुष्मानो! क्या श्रमण गौतम देव-लोक में उत्पन्न होने के लिए ब्रह्मचर्य का जीवन जीता है? तो भिक्षुओ, ऐसा पूछने पर क्या तुम्हें पीड़ा नहीं होगी, लज्जा नहीं आयगी, घृणा नहीं होगी?

"भंते! हां।"

"भिक्षुओ, इससे पहले कि तुम्हें दिव्य-आयु, दिव्य-वर्ण, दिव्य-सुख, दिव्य-यश तथा दिव्य-आधिपत्य से पीड़ा हो, लज्जा हो, घृणा हो, तुम्हें

कायिक-दुश्चरितसे, वाचिक-दुश्चरित से तथा मानसिक-दुश्चरित से पीड़ा होनी चाहिए, लज्जा होनी चाहिए, घृणा होनी चाहिए।"

९. वणिक सुत्त (प्रथम)

१९. "भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन बातें होती हैं, वह अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त धन को बढ़ा सकने में अक्षम होता है। कौन-सी तीन बातें ?

"यहां, भिक्षुओ, जो दुकानदार पूर्वाह्न में सावधानी से अपना कारोबार नहीं करता, मध्याह्न में सावधानी से अपना कारोबार नहीं करता, शाम में सावधानी से अपना कारोबार नहीं करता।भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन बातें होती हैं वह अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त धन को बढ़ा सकने में अक्षम होता है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन धर्म होते हैं वह अप्राप्त कुशल-धर्म को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त कुशल-धर्म को बढ़ा सकने में अक्षम होता है।

"कौन-से तीन?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु पूर्वाह्न के समय सम्यक-प्रकार से समाधि के निमित्त का अधिष्ठान नहीं करता, मध्याह्न के समय सम्यक प्रकार से समाधि के निमित्त का अधिष्ठान नहीं करता, शाम के समय समाधि के निमित्त का अधिष्ठान नहीं करता।

"भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन धर्म होते हैं, वह अप्राप्त कुशल-धर्म को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त कुशल-धर्म्को बढ़ा सकने में अक्षमहोता है।

"भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन बातें होती हैं, वह अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त धन को बढ़ा सकने में सक्षम होता है। कौन-सी तीन बातें?

"यहां, भिक्षुओ, जो दुकानदार पूर्वाह्न के समय सावधानी से अपना कारोबार करता है, मध्याह्न के समय सावधानी से अपना कारोबार करता है, शाम के समय सावधानी से अपना कारोबार करता है। भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन बातें होती हैं वह अप्राप्त धन को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त धन को बढ़ा सकने में सक्षमहोता है।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन धर्म होते हैं, वह अप्राप्त कुशल-धर्म को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त कुशल-धर्म को बढ़ा सकने में सक्षम होता है। कौन-से तीन?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु पूर्वाह्न के समय सम्यक प्रकार से समाधि के निमित्त का अधिष्ठान करता है, मध्याह्न के समय... शाम के समय समाधि के निमित्त का अधिष्ठान करता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन धर्म होते हैं वह अप्राप्त कुशल-धर्म को प्राप्त कर सकने में तथा प्राप्त कुशल-धर्म को बढ़ा सकने में सक्षम होता है।"

१०. वणिक सुत्त (द्वितीय)

२०. "भिक्षुओ, जिस दुकानदार में ये तीन बातें होती हैं, वह शीघ्र ही संपत्ति की अधिकता वा विपुलता को प्राप्त कर लेता है। कौन-सी तीन?

"यहां, भिक्षुओ, एक तो दुकानदार चक्षुमान होता है, दूसरे विदुर (जानकार) होता है, तीसरे विश्वासपत्र होता है।

"भिक्षुओ, दुकानदार चक्षुमान कैसे होता है? यहां, भिक्षुओ, दुकानदार बेचने के सामान को जानता है कि यह इस भाव खरीदा हुआ है, इस दाम पर बेचने से इतना मूल आ जायगा और इतना लाभ रहेगा। भिक्षुओ, इस प्रकार दुकानदार चक्षुमान होता है।

"भिक्षुओ, दुकानदार विदुर कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, दुकानदार बेचने का सामान खरीदने-बेचने में कुशल होता है। भिक्षुओ, इस प्रकार दुकानदार विदुर होता है।

"भिक्षुओ, दुकानदार विश्वासपात्र कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, जो श्रीमान महाधनवान तथा महासंपत्तिशाली गृहपति वा गृहपति-पुत्र हैं वे उसके बारे में जानते हैं कि यह दुकानदार चक्षुमान है, विदुर है, पुत्र-स्त्री का पालन करने में समर्थ है तथा समय-समय पर हमें हमारे धन का सूद या लाभ देने में समर्थ है। वे उसे संपत्ति देते हैं कि सौम्य! यहां से यह संपत्ति ले जा, पुत्र-स्त्री का पोषण कर तथा समय-समय पर हमें भी सूद या लाभ दे। भिक्षुओ, इस प्रकार दुकानदार विश्वासपात्र होता है। भिक्षुओ, इन तीन बातों से दुकानदार शीघ्र ही संपत्ति की अधिकता व विपुलता को प्राप्त कर लेता है।

"इस प्रकार भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन धर्म होते हैं वह शीघ्र ही कुशल-धर्मों में महानता वा विपुलता प्राप्त कर लेता है। कौन-से तीन?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु चक्षुमान होता है, विदुर होता है तथा विश्वासपात्र होता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु चक्षुमान किस प्रकार होता है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु 'यह दुःख है' इसे यथार्थ रूप से जानता है... 'यह निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है' इसे यथार्थ रूप से जानता है। भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु चक्षुमान होता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु विदुर किस प्रकार होता है?

"यहां, भिक्षुओ, भिक्षु अकुशल-धर्मों का प्रहाण करने के लिए तथा कुशल-धर्मों के उत्पादन के लिए प्रयत्नशील होता है, सामर्थ्यवान होता है, दृढ़ पराक्रमी होता है। वह कुशल-धर्मों का जुआ कंधे पर धारण किये होता है, अर्थात वह बिना श्रेष्ठ मार्ग को प्राप्त किये प्रयत्न करना नहीं छोड़ता है। भिक्षुओ, भिक्षु इस प्रकार विदुर होता है।

"भिक्षुओ, भिक्षु किस प्रकार विश्वासपात्र होता है? यहां, भिक्षुओ, भिक्षु जो बहुश्रुत भिक्षु हैं, जो आगम या शास्त्र के जानकार हैं, जो धर्मधर हैं, जो विनयधर हैं, जो मातृका-धर हैं, उनके पास समय-समय पर जाकर पूछता है, प्रश्न करता है – भंते! यह कैसे है, इसका क्या अर्थ है? उसके लिए वे आयुष्मान ढँके को उघाड़ देते हैं, अस्पष्ट को स्पष्ट कर देते हैं, अनेक प्रकार के संदिग्ध विषयों में शंका-समाधान कर देते हैं।

"भिक्षुओ, इस प्रकार भिक्षु विश्वासपात्र होता है। भिक्षुओ, जिस भिक्षु में ये तीन धर्म होते हैं वह शीघ्र ही कुशल-धर्मों में महानता वा विपुलता प्राप्त कर लेता है।"

* * * * *

३. पुद्गल वर्ग

१. समिद्ध सुत्त

२१. ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवनाराम में विहार करते थे। तब आयुष्मान समिद्ध तथा आयुष्मान महाकोट्ठिक आयुष्मान सारिपुत्त के पास गये। जाकर आयुष्मान सारिपुत्त के साथ कुशलक्षेम की बातचीत की... एक ओर बैठे हुए आयुष्मान समिद्ध को आयुष्मान सारिपुत्त ने यह कहा –

"आयुष्मान समिद्ध! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन? एक काय-साक्षी, दूसरे दृष्टि-प्राप्त तथा तीसरे श्रद्धा-विमुक्त।

आयुष्मान! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। आयुष्मान! इन तीन प्रकार के लोगों में तुम्हें कौन-सा अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ जंचता है?"

"आयुष्मान सारिपुत्त! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन? काय-साक्षी, दृष्टि-प्राप्त तथा श्रद्धा-विमुक्त। आयुष्मान! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। आयुष्मान, इन तीन प्रकार के लोगों में जो यह श्रद्धा-विमुक्त है वह मुझे अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ जंचता है। यह किसलिए? आयुष्मान! इस व्यक्ति की श्रद्धा-इंद्रिय बलवती है।"

अब आयुष्मान सारिपुत्त ने आयुष्मान महाकोट्ठिक को यह कहा – "आयुष्मान कोट्ठित! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन? कायसाक्षी... आयुष्मान! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। आयुष्मान! इन तीन प्रकार के लोगों में तुम्हें कौन-सा अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ जंचता है?"

"आयुष्मान सारिपुत्त! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन? काय-साक्षी... आयुष्मान! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। आयुष्मान! इन तीन प्रकार के लोगों में जो यह काय-साक्षी है वह मुझे अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ जंचता है। यह किसलिए? आयुष्मान! इस व्यक्ति की समाधि-इंद्रिय बलवती है।"

तब आयुष्मान महाकोट्ठिक ने आयुष्मान सारिपुत्त को यह कहा – "आयुष्मान सारिपुत्त! इस संसार में... कौन-से तीन? काय-साक्षी... आयुष्मान! इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। आयुष्मान! इन तीन प्रकार के लोगों में जो यह दृष्टि-प्राप्त है वह मुझे अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ जंचता है। यह किसलिए? इस व्यक्ति की प्रज्ञा-इंद्रिय बलवती है।"

अब आयुष्मान सारिपुत्त ने आयुष्मान समिद्ध तथा आयुष्मान महाकोट्ठिक को यह कहा –

"आयुष्मानो! हम सब ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार व्यक्त किया। आओ, भगवान के पास चलें। पास जाकर भगवान से यह बात कहें। फिर जैसे हमारे भगवान कहेंगे वैसा स्वीकार करेंगे।"

आयुष्मान समिद्ध तथा आयुष्मान महाकोट्ठिक ने आयुष्मान सारिपुत्त को प्रत्युत्तर दिया – "ठीक है, आयुष्मान!" तब आयुष्मान सारिपुत्त, आयुष्मान समिद्ध तथा आयुष्मान महाकोट्ठिक भगवान के पास गये। पास पहुँचकर, भगवान को नमस्कार कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे हुए आयुष्मान

सारिपुत्त ने आयुष्मान समिद्ध तथा आयुष्मान महाकोट्ठिक के साथ जितनी बातचीत हुई थी सब भगवान से कह दी।

"सारिपुत्त! निश्चित रूप से यह कहना कि इन तीन प्रकार के लोगों में यह अधिक अच्छा है, यह अधिक श्रेष्ठ है, आसान नहीं है। सारिपुत्त! इसकी संभावना है कि जो यह व्यक्ति श्रद्धा-विमुक्त हो वह अर्हत्व के मार्ग पर आरूढ़ हो और जो यह व्यक्ति काय-साक्षी है वह सकृदागामी वा अनागामी हो और इसी प्रकार जो यह दृष्टि-प्राप्त है वह भी सकृदागामी वा अनागामी हो!

"सारिपुत्त! निश्चित रूप से यह कहना कि इन तीन प्रकार के लोगों में यह अधिक अच्छा है, यह अधिक श्रेष्ठ है, आसान नहीं है। सारिपुत्त! इसकी संभावना है कि जो यह व्यक्ति काय-साक्षी है वह अर्हत्व के मार्ग पर आरूढ़ हो और जो यह व्यक्ति श्रद्धा-विमुक्त है वह सकृदागामी वा अनागामी हो और इसी प्रकार जो यह दृष्टि-प्राप्त है वह भी सकृदागामी वा अनागामी हो।

"सारिपुत्त! निश्चित रूप से यह कहना कि इन तीन प्रकार के लोगों में यह अधिक अच्छा है, यह अधिक श्रेष्ठ है, आसान नहीं है। सारिपुत्त! इसकी संभावना है कि जो यह व्यक्ति दृष्टि-प्राप्त है, वह अर्हत्व के मार्ग पर आरूढ़ हो और जो यह व्यक्ति श्रद्धा-विमुक्त है, वह सकृदागामी वा अनागामी हो और इसी प्रकार जो यह काय-साक्षी है, वह भी सकृदागामी वा अनागामी हो।

"सारिपुत्त। निश्चित रूप से यह कहना कि इन तीन प्रकार के लोगों में यह अधिक अच्छा है, यह अधिक श्रेष्ठ है, आसान नहीं है।"

२. ग्लान सुत्त

२२. "भिक्षुओ, इस संसार में तीन तरह के रोगी हैं। कौन-से तीन तरह के ?

"यहां, भिक्षुओ, एक रोगी ऐसा होता है कि चाहे उसे अनुकूल भोजन मिले और चाहे न मिले; चाहे उसे अनुकूल औषध मिले और चाहे न मिले; चाहे उसे अनुकूल सेवक मिले और चाहे न मिले; वह उस रोग से मुक्त नहीं होता।

"यहां, भिक्षुओ, एक (दूसरा) रोगी ऐसा होता है कि चाहे उसे अनुकूल भोजन मिले, चाहे न मिले; चाहे उसे अनुकूल औषध मिले, चाहे न मिले, चाहे उसे अनुकूल सेवक मिले, और चाहे न मिले; वह उस रोग से मुक्त होता है।

"यहां, भिक्षुओ, एक (तीसरा) रोगी होता है कि उसे अनुकूल भोजन मिले, न मिलने से नहीं; अनुकूल औषध मिले, न मिलने से नहीं; अनुकूल सेवक मिले, न मिलने से नहीं; वह उस रोग से मुक्त होता है।

"भिक्षुओ, इनमें जो यह रोगी है जिसे अनुकूल भोजन मिले, न मिलने से नहीं, अनुकूल औषध मिले, न मिलने से नहीं, अनुकूल सेवक मिले, न मिलने से नहीं, तो वह रोग से मुक्त होता है, ऐसे ही रोगी के लिए पथ्य, औषध और सेवक की व्यवस्था करने के लिए कहा गया है। किंतु ऐसे रोगी को ही ध्यान में रखकर अन्य रोगियों की सेवा करनी चाहिए। भिक्षुओ, लोक में ये तीन तरह के रोगी हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, इस संसार में ये तीन रोगी-समान मनुष्य हैं। कौन-से तीन?

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई चाहे उसे तथागत का दर्शन मिले, चाहे न मिले; चाहे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनना मिले, चाहे न मिले, वह कुशल-धर्मों में (आर्य अष्टांगिक) मार्ग को प्राप्त नहीं करता।

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई चाहे उसे तथागत का दर्शन मिले, चाहे न मिले; चाहे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनना मिले, चाहे न मिले, वह कुशल-धर्मों में (आर्य अष्टांगिक) मार्ग को प्राप्त करता है।

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई यदि उसे तथागत का दर्शन मिले, नहीं मिलने से नहीं; यदि उसे तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनना मिले, न मिलने से नहीं, वह कुशल-धर्मों में (आर्य अष्टांगिक) मार्ग को प्राप्त करता है।

"भिक्षुओ, जो यह व्यक्ति तथागत का दर्शन मिलने से, न मिलने से नहीं; तथागत द्वारा उपदिष्ट धर्म-विनय सुनना मिलने से, न मिलने से नहीं; कुशल-धर्मों में मार्ग के सम्यकत्व का लाभ करता है, भिक्षुओ, इस एक व्यक्ति के लिए धर्म-देशना की अनुज्ञा की गयी है। भिक्षुओ, इस एक व्यक्ति के निमित्त से दूसरों को भी धर्मोपदेश दिया जाना चाहिए।

"भिक्षुओ, इस संसार में ये तीन रोगी-समान मनुष्य हैं।"

३. संस्कार सुत्त

२३. "भिक्षुओ, संसार में ये तीन तरह के व्यक्ति हैं। कौन-से तीन तरह के?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति दुर्भावपूर्ण कायिक कर्म की राशि बनाता है, दुर्भावपूर्ण वाचिक कर्म की राशि बनाता है, दुर्भावपूर्ण मानसिक कर्म की राशि बनाता है। वह दुर्भावपूर्ण शारीरिक-कर्म की राशि बनाकर, दुर्भावपूर्ण वाचिक-कर्म की राशि बनाकर, दुर्भावपूर्ण मानसिक-कर्म की राशि बनाकर दुर्भावपूर्ण (दुःखद) लोक में उत्पन्न होता है। वैसे ही लोक में उत्पन्न होकर वैसे

ही लोगों का स्पर्श पाकर, प्रभावित हो एकांत-दुःख वेदना का अनुभव करता है जैसे कि नरक में उत्पन्न हुए प्राणी।

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति सद्भावपूर्ण कायिक-कर्म की राशि बनाता है, सद्भावपूर्ण वाचिक-कर्म की राशि बनाता है, सद्भावपूर्ण मानसिक-कर्म की राशि बनाता है। वह सद्भावपूर्ण कायिक-कर्म की राशि बनाकर... सद्भावपूर्ण मानसिक-कर्म की राशि बनाकर सद्भावपूर्ण लोक में उत्पन्न होता है। वैसे ही लोक में उत्पन्न होकर वैसे ही लोगों का स्पर्श पाकर, प्रभावित हो एकांत-सुख वेदना का अनुभव करता है जैसे कि शुभकीर्ण देवता।

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति दुर्भावपूर्ण भी तथा सद्भावपूर्ण भी कायिक-कर्म की राशि बनाता है... मानसिक-कर्म की राशि बनाता है। वह दुर्भावपूर्ण भी तथा सद्भावपूर्ण भी कायिक-कर्म...मानसिक-कर्म की राशि बनाकर दुर्भावपूर्ण भी सद्भावपूर्ण भी लोक में उत्पन्न होता है। वैसे ही लोक में उत्पन्न होकर वैसे ही लोगों का स्पर्श पाकर, प्रभावित हो सुख-दुःख मिश्रित वेदनाओं का अनुभव करता है जैसे कुछ मनुष्य, कुछ देव तथा कुछ विनिपातिक।

"भिक्षुओ, संसार में ये तीन तरह के व्यक्ति हैं।"

४. बहूपकार सुत्त

२४. "भिक्षुओ, ये तीन व्यक्ति व्यक्ति का बहुत उपकार करने वाले होते हैं। कौन-से तीन?

"भिक्षुओ, जिस व्यक्ति के कारण व्यक्ति बुद्ध की शरण जाता है, धर्म की शरण जाता है तथा संघ की शरण जाता है, वह व्यक्ति उस व्यक्ति का बहुत उपकार करने वाला होता है।

"और भिक्षुओ, जिस व्यक्ति के कारण व्यक्ति 'यह दुःख है' इसे यथाभूत जानता है, 'यह दुःख-समुदय है' इसे...'यह दुःख-निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है' इसे यथाभूत जानता है, भिक्षुओ, वह व्यक्ति उस व्यक्ति का बहुत उपकार करने वाला होता है।

"फिर भिक्षुओ, जिस व्यक्ति के कारण कोई व्यक्ति आस्रवों का क्षय करके इसी जीवन में अनास्रव चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्ति को स्वयं अभिज्ञात कर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है, वह व्यक्ति उस व्यक्ति का बहुत उपकार करने वाला होता है।

"भिक्षुओ, ये तीन व्यक्ति व्यक्ति का बहुत उपकार करने वाले हैं। भिक्षुओ, मैं कहता हूं कि इन तीन व्यक्तियों से बढ़कर व्यक्ति का कोई उपकार

करने वाला नहीं है। भिक्षुओ, यदि व्यक्ति इन तीन व्यक्तियों का अभिवादन कर, सम्मान देने के लिए खड़ा होकर, हाथ-जोड़कर, मैत्रीपूर्ण व्यवहार कर, चीवर, पिंडपात, शयनासन, गिलान-प्रत्यय, भैषज्य-परिष्कार आदि देकर प्रत्युपकार करना चाहे तो भी यह सु-प्रत्युपकार नहीं होता।"

५. वज्रोपम सुत्त

२५. "भिक्षुओ, संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन? पुराने (बहते, स्रावी) व्रण के समान चित्त वाला व्यक्ति, बिजली के समान चित्त वाला व्यक्ति तथा वज्र के समान चित्त वाला व्यक्ति।

"भिक्षुओ, पुराने व्रण के समान चित्त वाला व्यक्ति कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, कोई व्यक्ति क्रोधी-स्वभाव का होता है, अशांत चित्तवाला, थोड़ा-सा भी कुछ कहने से वह बात उसे लग जाती है, उसे क्रोध आ जाता है, वह चिड़चिड़ा हो जाता है, वह कठोर हृदय हो विरोध करता है, वह क्रोध, द्वेष तथा अप्रसन्नता प्रकट करता है। जैसे पुराना व्रण लकड़ी या ठीकरा लग जाने से और भी बहने लग जाता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होता है... प्रकट करता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति पुराने व्रण के समान चित्त वाला व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, बिजली के समान चित्त वाला व्यक्ति कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, कोई व्यक्ति 'यह दुःख है' इसे यथार्थ रूप से जानता है...'यह दुःख-निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है', इसे यथार्थ रूप से जानता है। जैसे भिक्षुओ, कोई आंख वाला व्यक्ति बिजली चमकती घोर अंधेरी रात में रूप देखे, इसी प्रकार भिक्षुओ, यहां एक व्यक्ति यह 'दुःख है'...'यह दुःख-निरोध की ओर ले जाने वाला मार्ग है', इसे यथार्थ रूप से जानता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति बिजली के समान चित्त वाला व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, वज्र के समान चित्त वाला व्यक्ति कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, कोई व्यक्ति आस्रवों का क्षय करके, इसी जीवन में अनास्रव चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्ति को स्वयं जानकर, साक्षात कर, प्राप्त कर विहार करता है। भिक्षुओ, जैसे वज्र के लिए कुछ भी अभेद्य नहीं है, चाहे मणि हो, चाहे पाषाण हो, इसी प्रकार भिक्षुओ, एक व्यक्ति आस्रवों का क्षय कर... प्राप्तकर विहार करता है। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति वज्र के समान चित्त वाला व्यक्ति कहलाता है।

"भिक्षुओ, इस संसार में ये तीन प्रकार के लोग हैं।"

६. सेवितव्य सुत्त

२६. "भिक्षुओ, लोक में तीन तरह के लोग हैं। कौन-से तीन तरह के? भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति होता है जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति होता है जिसका अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति होता है जिसका सत्कार कर, गौरव कर, अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, वह व्यक्ति कैसा होता है जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए?

"यहां, भिक्षुओ, कोई व्यक्ति शील, समाधि तथा प्रज्ञा से हीन होता है। भिक्षुओ, उस पर करुणा या अनुकंपा करने की स्थिति को छोड़कर न उसका अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, वह व्यक्ति कैसा होता है जिसका अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए?

"यहां, भिक्षुओ, कोई व्यक्ति शील, समाधि तथा प्रज्ञा में अपने जैसा होता है। ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए। यह किसलिए? हम दोनों सदृश-शील वालों में शील-कथा आरंभ होगी, हमारी शील-कथा जारी रहेगी और उससे हमें सुख मिलेगा; हम दोनों सदृश-समाधि वालों के साथ समाधि-कथा आरंभ होगी, हमारी समाधि-कथा जारी रहेगी और उससे हमें सुख मिलेगा, हम दोनों सदृश-प्रज्ञा वालों के साथ प्रज्ञा-कथा आरंभ होगी, हमारी प्रज्ञा-कथा जारी रहेगी और उसमें हमें सुख मिलेगा – यही सोचकर ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, वह व्यक्ति कैसा होता है जिसका सत्कार कर, गौरव कर, अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए?

"यहां, भिक्षुओ, कोई व्यक्ति शील, समाधि तथा प्रज्ञा में अधिक होता है। ऐसे व्यक्ति का सत्कार कर, गौरव कर, अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए। यह किसलिए? मैं अपरिपूर्ण शील-स्कंध को परिपूर्ण करूंगा, परिपूर्ण शील-स्कंध को वहां-वहां (जो इसके लिए अलाभप्रद है, अनुपकारक है उसे छोड़कर लाभप्रद और उपकारक को) प्रज्ञा से संभाले रखूंगा, अपरिपूर्ण समाधि-स्कंध को परिपूर्ण करूंगा, परिपूर्ण

समाधि-स्कंध को वहां-वहां (जो इसके लिए अलाभप्रद है, अनुपकारक है उसे छोड़कर लाभप्रद और उपकारक को) प्रज्ञा से संभाले रखूंगा, अपरिपूर्ण प्रज्ञा-स्कंध को परिपूर्ण करूंगा, परिपूर्ण प्रज्ञा-स्कंध को वहां-वहां (जो इसके लिए अलाभप्रद है, अनुपकारक है उसे छोड़कर लाभप्रद और उपकारक को) प्रज्ञा से संभाले रखूंगा – यह सोचकर ऐसे व्यक्ति का सत्कार कर, गौरव कर, अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, लोक में ये तीन तरह के लोग हैं।"

"निहीयति पुरिसो निहीनसेवी, न च हायेथ कदाचि तुल्यसेवी।
सेट्ठमुपनमं उदेति खिप्पं, तस्मा अत्तनो उत्तरिं भजेथा"ति॥

["अपने से हीन व्यक्ति की संगति करने वाला स्वयं हीन हो जाता है, समान की संगति करने वाला कभी ह्रास को प्राप्त नहीं होता, अपने से श्रेष्ठ की संगति करने वाला शीघ्र ही उन्नति को प्राप्त होता है। इसलिए अपने से श्रेष्ठ की ही संगति करनी चाहिए।"]

७. जुगुप्सितव्य (घृणा करने योग्य) सुत्त

२७. "भिक्षुओ, लोक में ये तीन तरह के लोग हैं। कौन-से तीन तरह के? भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति होता है जो घृणा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति होता है जो उपेक्षा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए। भिक्षुओ, ऐसा व्यक्ति होता है जिसका अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, वह व्यक्ति कैसा होता है जो घृणा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति होता है दुःशील, पापी, अपवित्र, शंकित आचरण वाला, प्रच्छन्न (गुप्त) आचरण करने वाला, अश्रमण होकर 'श्रमण' कहलाने वाला, अब्रह्मचारी होकर 'ब्रह्मचारी' कहलाने वाला, भीतर से सड़ा हुआ, बेकार, कूड़ा-करकट भिक्षुओ, इस तरह का व्यक्ति घृणा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए। यह किसलिए? भिक्षुओ, चाहे कोई ऐसे व्यक्ति का कुछ भी अनुसरण न करता हो तो भी उसका अपयश होता है – यह पापियों का मित्र

है, यह पापियों का सहायक है, यह पापियों का जिगरी दोस्त है। जिस प्रकार गूह में लिबड़ा हुआ सर्प चाहे नहीं डँसे तो भी लीबेड़ देगा, इसी प्रकार भिक्षुओ, चाहे कोई ऐसे व्यक्ति का कुछ भी... पापियों का दोस्त है। इसलिए इस प्रकार का व्यक्ति घृणा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, वह व्यक्ति कैसा होता है जो उपेक्षा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए।

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई व्यक्ति क्रोधी-स्वभाव का होता है, अशांत चित्तवाला, कुछ थोड़ा-भी बोलने से बिगड़ जाता है, क्रोधित हो जाता है, चिड़चिड़ा हो जाता है, वह कठोर हृदय हो विरोधी हो जाता है, क्रोध, द्वेष और असंतोष प्रकट करता है। जैसे भिक्षुओ, पुराना व्रण लकड़ी या ठीकरा लग जाने से और बहने लग जाता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोई व्यक्ति... असंतोष प्रकट करता है। जैसे भिक्षुओ, तिंडुक का अलाव लकड़ी या ठीकरे से छेड़ देने से और भी अधिक चिट-चिट करता है, इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोई व्यक्ति... असंतोष प्रकट करता है। जैसे भिक्षुओ, गूह का गड्ढा लकड़ी या ठीकरे से छेड़ देने से और भी अधिक दुर्गंध देता है, उसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोई व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होता है, अशांत, कुछ थोड़ा-भी बोलने से... असंतोष प्रकट करता है। भिक्षुओ, इस प्रकार का व्यक्ति उपेक्षा करने योग्य होता है, जिसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए, न आदर करना चाहिए। यह किसलिए? इस प्रकार का व्यक्ति मेरा अपमान भी कर सकता है, अपशब्द भी कह सकता है और मुझे अनर्थ, हानि भी पहुँचा सकता है। इसलिए इस प्रकार के व्यक्ति के प्रति उपेक्षा करनी चाहिए, उसका न अनुसरण करना चाहिए, न सेवा करनी चाहिए और न आदर करना चाहिए।

"भिक्षुओ, वह व्यक्ति कैसा होता है जिसका अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए?

"यहां, भिक्षुओ, एक व्यक्ति शीलवान होता है, कल्याणधर्मी। भिक्षुओ, ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए। यह किसलिए? भिक्षुओ, ऐसे व्यक्ति का कोई कुछ अनुसरण न भी करे, तब भी उसका यश होता है – यह सज्जनों का मित्र है, सज्जनों का

सहायक है तथा सज्जनों का जिगरी दोस्त है। इसलिए इस प्रकार के व्यक्ति का अनुसरण करना चाहिए, सेवा करनी चाहिए, आदर करना चाहिए।

भिक्षुओ, इस संसार में ये तीन तरह के लोग हैं।"

"निहीयति पुरिसो निहीनसेवी, न च हायेथ कदाचि तुल्यसेवी।
सेट्ठमुपनमं उदेति खिप्पं, तस्मा अत्तनो उत्तरिं भजेथा"ति॥

["अपने से हीन व्यक्ति की संगत करने वाला स्वयं हीन हो जाता है, समान की संगत करने वाला कभी ह्रास को प्राप्त नहीं होता, अपने से श्रेष्ठ की संगत करने वाला शीघ्र ही उन्नति को प्राप्त होता है। इसलिए अपने से श्रेष्ठ की ही संगत करनी चाहिए।"]

८. गूथभाषी (विष्ठा) सुत्त

२८. "भिक्षुओ, संसार में तीन तरह के लोग हैं। कौन-से तीन तरह के? गूथ-भाषी, पुष्प-भाषी तथा मधु-भाषी।

"भिक्षुओ, गूथ-भाषी आदमी कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी चाहे उसे सभा में ले जाकर, चाहे परिषद में ले जाकर, चाहे जाति-समूह में ले जाकर, चाहे पूग (=श्रेणी, व्यवसाय-विशेष का संगठन) में ले जाकर और चाहे राज-दरबार में ले जाकर, यदि उससे यह कहकर साक्षी पूछी जाय कि हे पुरुष! जो जानता हो वह कह। वह न जानता हुआ कहेगा कि जानता हूं, जानता हुआ कहेगा कि नहीं जानता हूं; न देखता हुआ कहेगा कि देखता हूं और देखता हुआ कहेगा कि नहीं देखता हूं। ऐसा वह या अपने लिए या पराये के लिए करेगा या किसी भौतिक लाभ के लिए करेगा। वह जान-बूझ कर झूठ बोलने वाला होगा।

"भिक्षुओ, ऐसा आदमी गूथ-भाषी होता है।

"भिक्षुओ, पुष्प-भाषी आदमी कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी चाहे उसे सभा में ले जाकर, चाहे परिषद में ले जाकर, चाहे जाति-समूह में ले जाकर, चाहे पूग में ले जाकर और चाहे राज-दरबार में ले जाकर, यदि उससे यह कहकर साक्षी पूछी जाय कि हे पुरुष! जो भली प्रकार जानता हो वह कह। वह न जानता हुआ कहेगा कि नहीं जानता हूं, जानता हुआ कहेगा कि जानता हूं, न देखता हुआ कहेगा कि नहीं देखता हूं, देखता हुआ कहेगा कि देखता हूं। वह न अपने लिए, न पराये के लिए और न किसी भौतिक लाभ के लिए जान-बूझ कर झूठ बोलने वाला होगा। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पुष्प-भाषी होता है।

"भिक्षुओ, मधु-भाषी आदमी कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी कठोर-वाणी बोलना छोड़ कठोर-वाणी से विरत होकर रहता है। जो वाणी निर्दोष होती है, कर्णप्रिय होती है, प्रेम पैदा करने वाली होती है, हृदय में पैठ जाने वाली होती है, शिष्ट होती है, बहुत जनों को सुंदर, बहुत जनों को प्रिय लगने वाली होती है – ऐसी वाणी बोलता है। भिक्षुओ, ऐसा आदमी मधु-भाषी होता है।

"भिक्षुओ, संसार में ये तीन प्रकार के आदमी हैं।"

९. अंध सुत्त

२९. "भिक्षुओ, संसार में तीन प्रकार के लोग हैं। कौन-से तीन प्रकार के? अंधे, एक आंखवाले, दोनों आंख वाले।

"भिक्षुओ, अंधा आदमी कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, किसी-किसी आदमी के पास ऐसी आंख नहीं होती जिससे कि वह अप्राप्त संपत्ति को प्राप्त कर सके और प्राप्त संपत्ति को बढ़ा सके; उसकी ऐसी आंख भी नहीं होती जिससे वह कुशल-अकुशलधर्मों की पहचान कर सके, सदोष-निर्दोष धर्मों की पहचान कर सके, हीन-प्रणीत धर्मों की पहचान कर सके तथा परस्पर-विरोधी कृष्ण-शुक्ल धर्मों की पहचान कर सके। भिक्षुओ, ऐसा आदमी अंधा कहलाता है।

"और भिक्षुओ, एक-आंख वाला आदमी कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, किसी-किसी आदमी के पास ऐसी आंख होती है जिससे कि वह अप्राप्त संपत्ति को प्राप्त कर सके और प्राप्त संपत्ति को बढ़ा सके; किंतु उसकी ऐसी आंख नहीं होती जिससे वह कुशल-अकुशलधर्मों की पहचान कर सके, सदोष-निर्दोष धर्मों की पहचान कर सके, हीन-प्रणीत धर्मों की पहचान कर सके तथा परस्पर-विरोधी कृष्ण-शुक्ल धर्मों की पहचान कर सके। भिक्षुओ, ऐसा आदमी एक-आंख वाला कहलाता है।

"और भिक्षुओ, दो आंख वाला आदमी कैसा होता है? यहां, भिक्षुओ, किसी-किसी आदमी के पास ऐसी आंख होती है जिससे कि वह अप्राप्त संपत्ति को प्राप्त कर सके और प्राप्त संपत्ति को बढ़ा सके; और उसकी ऐसी आंख भी होती है जिससे वह कुशल-अकुशलधर्मों की पहचान कर सके, सदोष-निर्दोष धर्मों की पहचान कर सके, हीन-प्रणीत धर्मों की पहचान कर सके तथा परस्पर-विरोधी कृष्ण-शुक्ल धर्मों की पहचान कर सके। भिक्षुओ, ऐसा आदमी दो आंख वाला कहलाता है।

"भिक्षुओ, संसार में ये तीन तरह के लोग हैं।"

"न चेव भोगा तथारूपा, न च पुञ्ञानि कुब्बति।
उभयत्थ कलिग्गाहो, अन्धस्स हतचक्खुनो॥

"अथापरायं अक्खातो, एकचक्खु च पुग्गलो।
धम्माधम्मेन सठोसो, भोगानि परियेसति॥

"थेय्येन कूटकम्मेन, मुसावादेन चूभयं।
कुसलो होति सङ्घातुं, कामभोगी च मानवो।
इतो सो निरयं गन्त्वा, एकचक्खु विहञ्ञति॥

"द्विचक्खु पन अक्खातो, सेट्ठो पुरिसपुग्गलो।
धम्मलद्धेहि भोगेहि, उट्ठानाधिगतं धनं॥

"ददाति सेट्ठसङ्कप्पो, अब्यग्गमानसो नरो।
उपेति भद्दकं ठानं, यत्थ गन्त्वा न सोचति॥

"अन्धञ्च एकचक्खुञ्च, आरका परिवज्जये।
द्विचक्खुं पन सेवेथ, सेट्ठं पुरिसपुग्गल"न्ति॥

["जो चक्षु-विहीन अंधा आदमी होता है उसके पास न तो वैसे भोग-पदार्थ ही होते हैं और न वह कोई पुण्य ही करता है, वह दोनों तरह से अभागा है।

एक दूसरा आदमी होता है जो एक आंख वाला है, वह जो धर्माधर्म में शठ है, वह संपत्ति प्राप्त करता है –चोरी से, ठगी से, दोनों तरह से झूठ बोल कर।वह कामभोगी आदमी कामभोग के पदार्थों का संग्रह करने में कुशल होता है। किंतु वह एक आंख वाला आदमी यहां से नरक में जाकर विनाश को प्राप्त होता है।

जो दो आंख वाला आदमी होता है वही श्रेष्ठ कहा गया है। वह अप्रमाद तथा धर्म से भोग्य पदार्थों को प्राप्त करता है। फिर वह व्यग्रता-रहित श्रेष्ठ संकल्प वाला नर (उनमें से) दान करता है। (इस कर्म से) वह श्रेष्ठ स्थान में जन्म लेता है जहां जाकर उसे अनुताप नहीं होता। इसलिए अंधे तथा एक चक्षु वाले से दूर-दूर रहे। जो दोनों आंख वाला श्रेष्ठ व्यक्ति हो उसी की संगत करे।"]

१०. अवकुब्ज (औंधा घड़ा) सुत्त

३०. "भिक्षुओ, संसार में तीन तरह के लोग हैं। कौन-से तीन तरह के ? औंधे-घड़े जैसी प्रज्ञा वाला आदमी, पल्ले (तराजू के दो हिस्सों में से कोई एक) जैसी प्रज्ञा वाला आदमी, बहुल-प्रज्ञ आदमी।

"भिक्षुओ, औंधे-घड़े जैसी प्रज्ञा वाला आदमी कैसा होता है?

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी भिक्षुओं से धर्म सीखने के लिए उनके पास विहार में निरंतर जाने वाला होता है। उसे भिक्षु आरंभ में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी, अंत में कल्याणकारी धर्म का उपदेश करते हैं, अर्थ-सहित, व्यंजन-सहित (अर्थात अर्थतः और अक्षरशः) संपूर्ण रूप से परिशुद्ध और परिपूर्ण धर्म को प्रकाशित करते हैं। वह आसन पर बैठा हुआ न उस उपदेश के आरंभ को मन में धारण करता है, न मध्य को और न अंत को। उस आसन से उठने पर भी न उस उपदेश के आरंभ को मन में धारण करता है, न मध्य को और न अंत को। भिक्षुओ, जैसे उल्टे घड़े में डाला हुआ पानी गिर पड़ता है, ठहरता नहीं है, इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी धर्म सीखने के लिए भिक्षुओं के पास... न अंत को। उस आसन से उठने पर भी... न अंत को। भिक्षुओ, ऐसा आदमी औंधे-घड़े जैसी प्रज्ञा वाला आदमी कहलाता है।

"भिक्षुओ, पल्ले जैसी प्रज्ञा वाला आदमी कैसा होता है?

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी भिक्षुओं से धर्म सीखने के लिए... प्रकाशित करते हैं। वह आसन पर बैठा हुआ उस उपदेश के आरंभ को भी मन में धारण करता है, मध्य को भी और अंत को भी। किंतु उस आसन से उठने पर न उस उपदेश के आरंभ को मन में धारण करता है, न मध्य को और न अंत को। जैसे भिक्षुओ, किसी आदमी के पल्ले में नाना प्रकार की खाद्य वस्तुयें हों, तिल हों, चावल हों, लड्डू हों, बेर हों; वह आसन से उठते समय असावधानी के कारण उन्हें बिखेर दे। उसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी भिक्षुओं से धर्म सीखने के लिए... प्रकाशित करते हैं। वह आसन पर बैठा... अंत को। किंतु आसन से उठने पर... न अंत को। भिक्षुओ, ऐसा आदमी पल्ले जैसी प्रज्ञा वाला कहलाता है।

"भिक्षुओ, बहुल-प्रज्ञ आदमी कैसा होता है?

"यहां, भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी भिक्षुओं से धर्म सीखने के लिए... प्रकाशित करते हैं। वह आसन पर बैठा हुआ उस उपदेश के आरंभ को भी मन

में धारण करता है... अंत को। वह आसन से उठने पर भी उस उपदेश के आरंभ को भी मन में धारण करता है... अंत को भी। भिक्षुओ, जैसे सीधे घड़े में डाला हुआ पानी उसमें ठहरता है, गिरता नहीं है; इसी प्रकार भिक्षुओ, कोई-कोई आदमी भिक्षुओं से धर्म सीखने के लिए... प्रकाशित करते हैं। वह आसन पर बैठा हुआ उस उपदेश के आरंभ को भी मन में धारण करता है... अंत को भी। वह आसन से उठने पर भी उस उपदेश के आरंभ को भी मन में धारण करता है... अंत को भी। भिक्षुओ, ऐसा आदमी बहुल-प्रज्ञ आदमी कहलाता है।

"भिक्षुओ, संसार में ये तीन तरह के लोग हैं।"

"अवकुज्जपञ्ञो पुरिसो, दुम्मेधो अविचक्खणो।
अभिक्खणम्पि चे होति, गन्ता भिक्खून सन्तिके॥

"आदिं कथाय मज्झञ्च, परियोसानञ्च तादिसो।
उग्गहेतुं न सक्कोति, पञ्ञा हिस्स न विज्जति॥

"उच्छङ्गपञ्ञो पुरिसो, सेय्यो एतेन वुच्चति।
अभिक्खणम्पि चे होति, गन्ता भिक्खून सन्तिके॥

"आदिं कथाय मज्झञ्च, परियोसानञ्च तादिसो।
निसिन्नो आसने तस्मिं, उग्गहेत्वान ब्यञ्जनं।
वुट्ठितो नप्पजानाति, गहितं हिस्स मुस्सति॥

"पुथुपञ्ञो च पुरिसो, सेय्यो एतेहि वुच्चति।
अभिक्खणम्पि चे होति, गन्ता भिक्खुन सन्तिके॥

"आदिं कथाय मज्झञ्च, परियोसानञ्च तादिसो।
निसिन्नो आसने तस्मिं, उग्गहेत्वान ब्यञ्जनं॥

"धारेति सेट्ठसङ्कप्पो, अब्यग्गमानसो नरो।
धम्मानुधम्मप्पटिपन्नो, दुक्खस्सन्तकरो सिया"ति॥

["दुर्बुद्धि, बे-अक्ल, औंधे घड़े जैसी प्रज्ञा वाला आदमी यदि भिक्षुओं के पास निरंतर भी जाता है, तो वह उस उपदेश का न आदि, न मध्य और न अंत ही ग्रहण कर सकता है, क्योंकि उसकी प्रज्ञा ही नहीं होती। उस आदमी की अपेक्षा पल्ले जैसी प्रज्ञा वाला आदमी श्रेष्ठ कहलाता है। वह यदि भिक्षुओं के पास निरंतर भी जाता है, तो वह आसन पर बैठे रहते समय उस धर्मोपदेश के

आदि, मध्य और अंत को व्यंजन-सहित ग्रहण कर लेता है। लेकिन उठने पर भली प्रकार नहीं जानता, क्योंकि ग्रहण किया हुआ भूल जाता है। इन दोनों से बहुल-प्रज्ञ आदमी श्रेष्ठतर माना जाता है। वह यदि भिक्षुओं के पास निरंतर भी जाता है, तो वह उस आसन पर बैठे रहते समय उस धर्मोपदेश के आदि, मध्य और अंत को व्यंजन-सहित ग्रहण कर लेता है। वह शांत-चित्त श्रेष्ठ-संकल्प वाला आदमी उस धर्म को अच्छी तरह धारण करता है। धर्मानुसार (बड़े तथा छोटे धर्मों के अनुसार) आचरण कर वह दुःख का अंत करनेवाला होता है।"]

* * * * *

४. देवदूत वर्ग

१. सब्रह्मक सुत्त

३१. "भिक्षुओ, जिन कुलों के पुत्र माता-पिता की घर में पूजा करते हैं वे ऐसे कुल हैं जहां ब्रह्मा वास करते हैं। जिन कुलों के पुत्र माता-पिता की घर में पूजा करते हैं वे ऐसे कुल हैं जहां पूर्वाचार्य वास करते हैं। भिक्षुओ, जिन कुलों के पुत्र माता-पिता की घर में पूजा करते हैं वे कुल दान देने योग्य हैं अर्थात पूज्य हैं।

"भिक्षुओ, ब्रह्मा – यह माता-पिता का ही पर्याय है। भिक्षुओ, पूर्व-आचार्य – यह माता-पिता का ही पर्याय है। भिक्षुओ, जो व्यक्ति दान देने योग्य हैं वे भी माता-पिता के ही पर्याय हैं।

"यह किसलिए? भिक्षुओ, माता-पिता का अपनी संतान पर बहुत उपकार होता है। वे पालन करनेवाले हैं, वे पोषण करनेवाले हैं, उन्होंने इस लोक से परिचय कराया है।

"ब्रह्माति मातापितरो, पुब्बाचरियाति वुच्चरे।
आहुनेय्या च पुत्तानं, पजाय अनुकम्पका॥

"तस्मा हि ने नमस्सेय्य, सक्करेय्य च पण्डितो।
अन्नेन अथ पानेन, वत्थेन सयनेन च।
उच्छादनेन न्हापनेन, पादानं धोवनेन च॥

"ताय नं पारिचरियाय, मातापितूसु पण्डिता।
इधेव नं पसंसन्ति, पेच्च सग्गे पमोदती"ति॥

["माता-पिता ही 'ब्रह्मा' कहे जाते हैं, माता-पिता ही पूर्वाचार्य कहे जाते हैं, माता-पिता ही दान देने योग्य कहे जाते हैं। वे अपनी संतान पर बहुत अनुकंपा करने वाले हैं। इसलिए बुद्धिमान (संतान) को चाहिए कि उन्हें नमस्कार करे, उनका अन्न से, पान से, वस्त्र से, शयनासन से सत्कार करे तथा मालिश करके, नहला करके, पांव धोकर उनकी सेवा, सत्कार करे। जो पंडित परिचर्या से माता-पिता को संतुष्ट करता है उसकी यहां भी प्रशंसा होती है और मृत्यु होने पर वह स्वर्ग में भी आनंदित होता है।"]

२. आनन्द सुत्त

३२. एक समय आयुष्मान आनन्द भगवान के पास गये। पास जाकर भगवान को नमस्कार कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे आयुष्मान आनन्द ने भगवान से यह कहा –

"भंते! क्या भिक्षु को ऐसी समाधि का लाभ हो सकता है कि इस सविज्ञान शरीर में ही उसे अहंकार, ममत्व तथा मान का बोध न हो, और इस काया से बाहर भी जितने निमित्त हैं, उन निमित्तों में भी उसे अहंकार, ममत्व तथा मान का बोध न हो और जिस चित्त-विमुक्ति, जिस प्रज्ञा-विमुक्ति के साथ विहार करते हुए अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होते, उस चित्त-विमुक्ति, उस प्रज्ञा-विमुक्ति को प्राप्त कर विहार करे?"

"आनन्द! भिक्षु को ऐसी समाधि का लाभ हो सकता है कि इस सविज्ञान शरीर में ही... प्राप्त कर विहार करे।"

"भंते! भिक्षु का वैसा समाधि-लाभ कैसा होता है कि इस सविज्ञान शरीर में ही... प्राप्त कर विहार करे?"

"यहां, आनन्द! इस विषय में भिक्षु को ऐसा लगता है –यही शांत है, यही प्रणीत है, जो यह सब संस्कारों का शमन, सभी उपधियों का त्याग, तृष्णा का क्षय, विराग, निरोध, निर्वाण है। इस प्रकार आनन्द! भिक्षु को ऐसी समाधि का लाभ हो सकता है कि इस सविज्ञान शरीर में ही... प्राप्त कर विहार करे।

"आनन्द! पुर्ण-प्रश्न पारायण में जो मैंने यह कहा है वह इसी अर्थ में कहा है –

"सङ्घाय लोकस्मिं परोपरानि, यस्सिञ्जितं नत्थि कुहिञ्चि लोके।
सन्तो विधूमो अनीघो निरासो, अतारि सो जातिजरन्ति ब्रूमी"ति॥

["संसार में उस पार तथा इस पार का ज्ञान प्राप्त करके जिसके मन में किसी भी विषय के संबंध में चंचलता नहीं है, उस शांत, निर्धूम (राग-रहित),

दुःख-रहित तथा तृष्णा-रहित पुरुष ने जाति-जरा को पार किया है – ऐसा मैं कहता हूं।"]

३. सारिपुत्त सुत्त

३३. एक समय आयुष्मान सारिपुत्त भगवान के पास गये। जाकर भगवान को प्रणाम कर एक ओर बैठ गये। एक ओर बैठे आयुष्मान सारिपुत्त को भगवान ने यह कहा –

"सारिपुत्त! मैं संक्षेप में भी धर्मोपदेश देता हूं, विस्तार से भी धर्मोपदेश देता हूं, संक्षिप्त-विस्तृत रूप से भी धर्मोपदेश देता हूं, किंतु उसके समझने वाले दुर्लभ हैं।"

"भगवान! इसी का समय है। सुगत! इसी का समय है। भगवान संक्षेप में भी धर्मोपदेश दें, विस्तार से भी धर्मोपदेश दें, संक्षिप्त-विस्तृत रूप से भी धर्मोपदेश दें; धर्म के समझने वाले होंगे।"

"तो सारिपुत्त! इस कारण ठीक इसी प्रकार सीखना चाहिए – इस सविज्ञान शरीर में अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होगा, इससे बाहर सभी निमित्तों में भी अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होगा, जिस चित्त-विमुक्ति, जिस प्रज्ञा-विमुक्ति को प्राप्त कर विहार करने पर अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होते, उस चित्त-विमुक्ति, उस प्रज्ञा-विमुक्ति को प्राप्त कर विहार करेंगे। हे सारिपुत्त! ठीक इसी प्रकार सीखना चाहिए।

"क्योंकि सारिपुत्त! इस सविज्ञान शरीर में भिक्षु के मन में अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होते, इससे बाहर के सभी निमित्तों में भी अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होते, जिस चित्त-विमुक्ति, जिस प्रज्ञा-विमुक्ति को प्राप्त कर अहंकार, ममत्व तथा मान उत्पन्न नहीं होते उस चित्त-विमुक्ति को, उस प्रज्ञा-विमुक्ति को प्राप्त कर विहार करता है। हे सारिपुत्त! ऐसे भिक्षु के विषय में कहा जाता है कि इसने तृष्णा को छिन्न-भिन्न कर दिया, संयोजनों को निर्मूल कर दिया और मान को संपूर्ण रूप से समझकर दुःख का अंत कर दिया।

"सारिपुत्त! उदय-प्रश्न पारायण में जो मैंने यह कहा वह उक्त अर्थ में ही कहा –

"पहानं कामसञ्ञानं, दोमनस्सान चूभयं।
थिनस्स च पनूदनं, कुक्कुच्चानं निवारणं॥

"उपेक्खासतिसंसुद्धं, धम्मतक्क पुरेजवं।
अञ्ञाविमोक्खं पब्रूमि, अविज्जाय पभेदन"न्ति॥

["कामनाओं तथा दौर्मनस्यों – इन दोनों का प्रहाण, आलस्य का नाश तथा कौकृत्य का निवारण, उपेक्षा तथा स्मृति की परिशुद्धि, सम्यक-संकष्ष (धर्म-तर्क) ही अग्रणी होता है (मार्गदर्शन करता है) तथा अविद्या का प्रभेदन जहां है वहीं विमुक्ति है – ऐसा मैं कहता हूं।"]

४. निदान सुत्त

३४. "भिक्षुओ! कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु (निदान) हैं। कौन-से तीन? लोभ कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, द्वेष कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है, मोह कर्मों की उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में लोभ है, जो लोभ से उत्पन्न हुआ है, जिसका निदान लोभ है, जिसका कारण लोभ है, उस कर्म के कर्ता का जन्म जहां होता है वहां वह कर्मविपाक उत्पन्न करता है, जहां वह कर्म पकता है, वहां उस कर्म का फल उसे भोगना होता है, उसी जन्म में अथवा अन्य किसी जन्म में।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में द्वेष है, जो द्वेष से उत्पन्न हुआ है, जिसका निदान द्वेष है, जिसका कारण द्वेष है, उस कर्म के कर्ता का जन्म जहां होता है वहां वह कर्मविपाक उत्पन्न करता है, जहां वह कर्म पकता है, वहां उस कर्म का फल उसे भोगना होता है, उसी जन्म में अथवा अन्य किसी जन्म में।

"भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में मोह है, जो मोह से उत्पन्न हुआ है, जिसका निदान मोह है, जिसका कारण मोह है, उस कर्म के कर्ता का जन्म जहां होता है वहां वह कर्मविपाक उत्पन्न करता है, जहां वह कर्म पकता है, वहां उस कर्म का फल उसे भोगना होता है, उसी जन्म में अथवा अन्य किसी जन्म में।

"भिक्षुओ, जैसे बीज हों अखंडित, सड़े न हों, हवा-धूप से खराब न हुए हों, सारवान हों, अच्छी तरह रखे हों, अच्छी तरह तैयार की गयी भूमि वाले सुक्षेत्र में डाले गये हों और उस पर अच्छी वर्षा हो, तो भिक्षुओ, वे बीज वृद्धि तथा विपुलता को प्राप्त होंगे ही। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस कर्म के मूल में लोभ है... अथवा अन्य किसी जन्म में। जिस कर्म के मूल में द्वेष है... अथवा अन्य किसी जन्म में। जिस कर्म के मूल में मोह है... अथवा अन्य किसी जन्म में।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्ति के ये तीन हेतु हैं। कौन-से तीन? अलोभ कर्मोंकी उत्पत्ति का हेतु है, अद्वेष कर्मोंकी उत्पत्ति का हेतु है, अमोह कर्मोंकी उत्पत्ति का हेतु है।

"भिक्षुओ, जिस कर्मके मूल में अलोभ है, जो अलोभ से उत्पन्न हुआ है, जिसका निदान अलोभ है, जिसका कारण अलोभ है, लोभ के न रहने पर उस कर्मका प्रहाण हो जाता है, उसकी जड़ उखड़ जाती है, वह कटे ताड़ वृक्ष की तरह हो जाता है, वह अभावप्राप्त हो जाता है, उसकी भावी उत्पत्ति रुक जाती है।

"भिक्षुओ, जिस कर्मके मूल में अद्वेष है, जो अद्वेष से उत्पन्न हुआ है, जिसका निदान अद्वेष है, जिसका कारण अद्वेष है, द्वेष के न रहने पर उस कर्म का प्रहाण हो जाता है, उसकी जड़ उखड़ जाती है, वह कटे ताड़ वृक्ष की तरह हो जाता है, वह अभावप्राप्त हो जाता है, उसकी भावी उत्पत्ति रुक जाती है।

"भिक्षुओ, जिस कर्मके मूल में अमोह है, जो अमोह से उत्पन्न हुआ है, जिसका निदान अमोह है, जिसका कारण अमोह है, मोह के न रहने पर उस कर्मका प्रहाण हो जाता है, उसकी जड़ उखड़ जाती है, वह कटे ताड़ वृक्ष की तरह हो जाता है, वह अभावप्राप्त हो जाता है, उसकी भावी उत्पत्ति रुक जाती है।

"भिक्षुओ, जैसे बीज अखंडित हों, सड़े न हों, हवा-धूप से खराब न हुये हों, सारवान हों, अच्छी तरह रखे हों, उन्हें आदमी आग में जला डाले, आग में जलाकर राख कर दे, राख करके तेज हवा में उड़ा दे अथवा शीघ्रगामी नदी में बहा दे, उससे उन बीजों का मूल नष्ट हो जाये, वे कटे ताड़ वृक्ष की तरह हो जायें, वे अभावप्राप्त हो जायें, उनकी भावी उत्पत्ति रुक जाये। इसी प्रकार भिक्षुओ, जिस कर्मके मूल में अलोभ है... उसकी भावी उत्पत्ति रुक जाती है, जिस कर्मके मूल में अद्वेष है... उसकी भावी उत्पत्ति रुक जाती है, जिस कर्म के मूल में अमोह है... उसकी भावी उत्पत्ति रुक जाती है।

"भिक्षुओ, कर्मों की उत्पत्तिके ये तीन हेतु हैं।"

"लोभजं दोसजञ्चेव, मोहजञ्चापिविद्दसु।
यं तेन पकतं कम्मं, अप्पं वा यदि वा बहुं।
इधेव तं वेदनियं, वत्थु अञ्ञं न विज्जति॥

"तस्मा लोभञ्च दोसञ्च, मोहञ्चापि विद्दसु।
विज्जं उप्पादयं भिक्खु, सब्बा दुग्गतियो जहे"ति॥

["जो मूर्ख लोभ, द्वेष अथवा मोह से प्रेरित होकर चाहे छोटा, चाहे बड़ा कुछ भी कर्म करता है, उसे ही वह भोगना पड़ता है, दूसरे को दूसरे का किया नहीं भोगना पड़ता। इसलिए बुद्धिमान भिक्षु को चाहिए कि लोभ, द्वेष और मोह का त्याग कर विद्या का लाभ कर सारी दुर्गतियों से मुक्त हो।"]

५. हत्थक सुत्त

३५. ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान आळवी (राष्ट्र) में गौवों के आने-जाने के मार्ग पर सिंसप-वन में गिरे पत्तों के आसन पर बैठे थे।

तब पैदल घूमते हुए हत्थक (नामक) आळवक राजपुत्र ने भगवान को उस प्रकार गौवों के आने-जाने के मार्ग पर सिंसप-वन में गिरे पत्तों के आसन पर बैठे देखा। देखकर भगवान के पास गया। पास जाकर भगवान को नमस्कार कर एक ओर बैठ हत्थकआळवक ने भगवान को यह कहा –

"क्या भंते भगवान! आप सुख से सोये?"

"हां कुमार! मैं सुख से सोया। संसार में जो लोग सुखपूर्वक सोते हैं, मैं उनमें से एक हूं।"

"भंते! यह हेमंत ऋतु की शीत रात्रि है, माघ और फाल्गुन के बीच के आठ दिनों का समय है, हिम-पात के दिन हैं, गौवों के खुरों की मारी हुई कठोर भूमि है, पत्तों का पतला बिछौना है, पेड़ पर कहीं-कहीं थोड़े पत्ते हैं, ठंडे कषाय-वस्त्र हैं, पर्वत-प्रदेशों से ठंढी हवा (वैरम्भक) आ रही है, और भगवान ने यह कहा है – 'हां कुमार! मैं सुख से सोया। संसार में जो लोग सुखपूर्वक सोते हैं, मैं उनमें से एक हूं!"

"तो कुमार! मैं तुझ से ही पूछता हूं, जैसे तुझे अच्छा लगे वैसा कहना। कुमार! तो तू क्या समझता है यहां किसी गृहपति वा गृहपति-पुत्र का ऊंचा मकान हो, लिपा-पुता हो, जहां हवा न आती हो, अर्गल लगा हो, खिड़की बंद हो; वहां एक पलंग हो जिस पर चार अंगुल अधिक की झालर वाला आस्तरण बिछा हो, ऊन का आस्तरण बिछा हो, घने ऊन का आस्तरण बिछा हो, कदली मृग के श्रेष्ठ चर्म का आस्तरण बिछा हो, उस पलंग के ऊपर वितान तना हो, सिर और पांव की ओर दो लाल तकिये हों, तेल-प्रदीप जल रहा हो, चार भार्यायें अच्छी तरह सेवा कर रही हों तो कुमार, तुझे इस विषय में कैसा लगता है वह सुख-पूर्वक सोयेगा अथवा नहीं?"

"भंते! वह सुखपूर्वक सोयेगा। संसार में जो सुखपूर्वक सोते हैं उनमें से वह एक होगा।"

"तो कुमार! तुम क्या मानते हो क्या उस गृहपति अथवा गृहपति-पुत्र को (काम-) राग से उत्पन्न होने वाली ऐसी शारीरिक वा मानसिक जलन (परिदाह) हो सकती है जिस (काम-) राग से उत्पन्न होने वाली जलन के कारण वह दुःखी रहे?"

"हां भंते!"

"कुमार! जिस (काम-) राग से उत्पन्न जलन के कारण वह गृहपति अथवा गृहपति-पुत्र जलता रह कर दुःखी रह सकता है, तथागत का वह राग प्रहीण हो गया है, उसका जड़-मूल कट गया है, वह कटे ताड़-वृक्ष की तरह हो गया है, वह अभावप्राप्त हो गया है, उसकी भावी उत्पत्ति जाती रही है। इसलिए मैं सुखपूर्वक सोया।

"तो कुमार! तुम क्या मानते हो क्या उस गृहपति अथवा गृहपति-पुत्र को द्वेष से उत्पन्न होने वाली (द्वेषज)... मोह से उत्पन्न होने वाली (मोहज) ऐसी शारीरिक वा मानसिक जलन हो सकती है जिस मोह से उत्पन्न होने वाली जलन के कारण वह दुःखी रहे?"

"हां भंते!"

"कुमार! जिस मोह से उत्पन्न होने वाली जलन के कारण वह गृहपति अथवा गृहपति-पुत्र जलता रह कर दुःखी रह सकता है, तथागत का वह मोह प्रहीण हो गया है, उसका जड़-मूल कट गया है, वह कटे ताड़-वृक्ष की तरह हो गया है, वह अभावप्राप्त हो गया है, उसकी भावी उत्पत्ति जाती रही है। इसलिए मैं सुखपूर्वक सोया।"

"सब्बदा वे सुखं सेति, ब्राह्मणो परिनिब्बुतो।
यो न लिम्पति कामेसु, सीतिभूतो निरूपधि॥

"सब्बा आसत्तियो छेत्वा, विनेय्य हदये दरं।
उपसन्तो सुखं सेति, सन्ति पप्पुय्य चेतसो"ति॥

["जो कामभोगों में लिप्त नहीं होता, जो शांत है, जो उपधि-रहित है, परिनिर्वृत्त है, वह ब्राह्मण निश्चित ही सुखपूर्वक सोता है। जो सभी आसक्तियों को काटकर हृदय के दुःख को दूर करता है, जो चित्त की शांति को प्राप्त करता है, ऐसा उपशांत, सुखपूर्व सोता है।"]

६. देवदूत सुत्त

३६. "भिक्षुओ, ये तीन देवदूत हैं। कौन-से तीन?

"भिक्षुओ, एक आदमी कायिक दुष्कर्म करता है, वाचिक दुष्कर्म करता है, मानसिक दुष्कर्म करता है। वह शरीर से दुष्कर्म करके ,वाणी से दुष्कर्म करके ,मन से दुष्कर्म करके शरीर छूटने पर, मरने के बाद अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में उत्पन्न होता है। तो भिक्षुओ, उसे नाना नरक-पाल बाहों से पकड़कर यमराज के पास ले जाते हैं – 'देव! यह आदमी मातृ-सेवक नहीं, पितृ-सेवक नहीं, श्रमणों की सेवा करने वाला नहीं, ब्राह्मणों (क्षीणास्रव) की सेवा करने वाला नहीं, परिवार में बड़े-बूढ़ों का आदर करने वाला नहीं, हे देव! इसे सजा दें।'

"भिक्षुओ, उस आदमी से यमराज प्रथम देवदूत के बारे में प्रश्न करता है, पूछता है, बातचीत करता है – 'हे पुरुष! क्या तूने मनुष्य-लोक में प्रकट हुए प्रथम देवदूत को नहीं देखा?'

"वह बोला – 'स्वामी! नहीं देखा।'

"तब भिक्षुओ, यमराज उस आदमी से पूछता है – 'हे पुरुष! क्या तूने मनुष्य-लोक में किसी ऐसी स्त्री या पुरुष को नहीं देखा जिसकी आयु अस्सी वर्ष की हो, नब्बे वर्ष की हो अथवा सौ वर्ष की हो; जो बूढ़ा हो, जो शहतीर की तरह टेढ़ा हो, जो टूट गया हो, जिसके हाथ में लाठी हो, जो चलता हुआ कांपता हो, जो रोगी हो, जिसका यौवन जाता रहा हो, जिसके दांत टूट गये हों, जिसके बाल सफेद हो गये हों, जिसकी खोपड़ी गंजी हो गयी हो, जिसके झुर्रियां पड़ गयी हों तथा जिसके बदन पर काले-सफेद निशान पड़ गये हों?'

"वह बोला – 'स्वामी! देखा है।'

"तो भिक्षुओ, उसे यमराज ने कहा –'हे पुरुष! तुझ विज्ञ, स्मृतिमान वृद्ध के मन में यह नहीं हुआ कि मैं भी जरा को प्राप्त होने वाला हूं, मैं भी जरा के अधीन हूं। मैं शरीर, वाणी तथा मन से शुभ-कर्म करूं।'

"वह बोला – 'स्वामी! मुझ से न हो सका। मैंने प्रमाद किया।'

"तब भिक्षुओ, उसे यमराज ने कहा –'हे पुरुष! प्रमाद के कारण तूने शरीर, वाणी अथवा मन से शुभ कर्म नहीं किये। तो हे पुरुष! अब तेरे साथ तेरे प्रमाद के अनुरूप व्यवहार करेंगे। यह जो पाप-कर्म है, यह न तेरी माता ने किया है, न पिता ने किया है, न भाई ने किया है, न बहन ने किया है, न मित्र-अमात्यों ने किया है, न परिवार तथा रिश्तेदारों ने किया है, न देवताओं ने किया है, न श्रमण-ब्राह्मणों ने किया है; यह पाप-कर्म तेरे ही द्वारा किया गया है, तू ही इसका फल भोगेगा'।

"तो भिक्षुओ, यमराज प्रथम देवदूत के बारे में प्रश्न करके, पूछ करके, बातचीत करके, दूसरे देवदूत के बारे में प्रश्न करता है, पूछता है, बातचीत करता है –'हे पुरुष! क्या तूने मनुष्य-लोक में प्रकट हुए दूसरे देवदूत को नहीं देखा?'

"वह बोला –'स्वामी! नहीं देखा।'

"तब भिक्षुओ, यमराज उस आदमी से पूछता है –'हे पुरुष! क्या तूने मनुष्य-लोक में किसी ऐसी स्त्री या पुरुष को नहीं देखा जो रोगी हो, जो दुःखी हो, जो बहुत बीमार हो, अपने मल-मूत्र में पड़ा हो, जिसे दूसरे ही आकर उठाते हों, दूसरे ही बिठाते हों?"

"वह बोला –'स्वामी! देखा है।'

"तो भिक्षुओ, उस यमराज ने कहा –'हे पुरुष! तुझ विज्ञ, स्मृतिमान वृद्ध के मन में यह नहीं हुआ कि मैं भी व्याधि को प्राप्त होने वाला हूं, मैं भी व्याधि के अधीन हूं। मैं शरीर, वाणी तथा मन से शुभ कर्म करूं?'

"वह बोला –'स्वामी! मुझ से न हो सका। मैंने प्रमाद किया।'

तब भिक्षुओ, उसे यमराज ने कहा –"हे पुरुष! प्रमाद के कारण तूने शरीर, वाणी अथवा मन से शुभ-कर्म नहीं किये। तो हे पुरुष! अब तेरे साथ तेरे प्रमाद के अनुरूप व्यवहार करेंगे। यह जो पाप-कर्म है, यह न तेरी माता ने किया है, न पिता ने किया है, न भाई ने किया है, न बहन ने किया है, न मित्र-अमात्यों ने किया है, न परिवार तथा रिश्तेदारों ने किया है, न देवताओं ने किया है, न श्रमण-ब्राह्मणों ने किया है, यह पाप-कर्म तेरे ही द्वारा किया गया है, तू ही इसका फल भोगेगा। "

"तो भिक्षुओ, यमराज द्वितीय देवदूत के बारे में प्रश्न करके, बातचीत करके, तृतीय देवदूत के बारे में प्रश्न करता है, पूछता है, बातचीत करता है – 'हे मनुष्य! क्या तूने मनुष्य-लोक में प्रकट हुए तीसरे देवदूत को नहीं देखा?'

"वह बोला –'स्वामी! नहीं देखा।'

"तब भिक्षुओ, यमराज उस आदमी से पूछता है –'हे पुरुष! क्या तूने मनुष्य-लोक में किसी ऐसी स्त्री या पुरुष को नहीं देखा जिसे मरे एक दिन हो गया हो, जिसे मरे दो दिन हो गये हों, जिसे मरे तीन दिन हो गये हों, जो फूल गया हो, जिसका शरीर नीला पड़ गया हो, जिसके बदन में पीप पड़ गयी हो?'

"वह बोला –'स्वामी! देखा है।'

"तो भिक्षुओ, उस यमराज ने कहा –'हे पुरुष! तुझ विज्ञ, स्मृतिमान वृद्ध के मन में यह नहीं हुआ कि मैं भी मरण को प्राप्त होने वाला हूं, मैं भी मरण के अधीन हूं। मैं शरीर, वाणी तथा मन से शुभ-कर्म क रूं?'

"वह बोला –'स्वामी! मुझ से न हो सका। मैंने प्रमाद किया।'

"तब भिक्षुओ, उसे यमराज ने कहा –'हे पुरुष! प्रमाद के कारण तूने शरीर, वाणी अथवा मन से शुभ-कर्म नहीं किये। तो हे पुरुष! अब तेरे साथ तेरे प्रमाद के अनुरूप व्यवहार करेंगे। यह जो पाप-कर्म है, यह न तेरी माता ने किया है, न पिता ने किया है, न भाई ने किया है, न बहन ने किया है, न मित्र-अमात्यों ने किया है, न परिवार तथा रिश्तेदारों ने किया है, न देवताओं ने किया है, न श्रमण-ब्राह्मणों ने किया है, यह पाप-कर्म तेरे ही द्वारा किया गया है, तू ही इसका फल भोगेगा'।

"तो भिक्षुओ, यमराज तृतीय देवदूत के बारे में प्रश्न करके ,पूछ करके , बातचीत करके चुप हो जाता है।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत पांच प्रकार के दंड से दंडित करते हैं – लोहे की तप्त कील हाथ में ठोकते हैं, लोहे की तप्त कील दूसरे हाथ में ठोकते हैं, लोहे की तप्त कील पांव में ठोकते हैं, लोहे की तप्त कील दूसरे पांव में ठोकते हैं, लोहे की तप्त कील छाती के बीच में ठोकते हैं। वह उससे दु:ख-पूर्ण, तीव्र कष्टदायक ,कटु वेदना का अनुभव करता है और तब तक नहीं मरता है जब तक उस पाप-कर्म का क्षय नहीं हो जाता।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत लिटा कर कुल्हाड़ी से छीलते हैं। वह उससे दु:ख-पूर्ण, तीव्र कष्ट-दायक ,कटु वेदना का अनुभव करता है और तब तक नहीं मरता है जब तक उस पाप-कर्म का क्षय नहीं हो जाता।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत पैर ऊपर सिर नीचे करके वसूले से छीलते हैं। वह उससे... हो जाता।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत रथ में जोतकर जलती हुई, प्रज्वलित, प्रदीप्त भूमि पर चलाते भी हैं, हांकते भी हैं। वह उससे... हो जाता।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत बड़े भारी, जलते हुए प्रज्वलित, प्रदीप्त, अंगारों के पर्वत पर चढ़ाते भी हैं, उतारते भी हैं। वह उससे... हो जाता।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत पैर ऊपर सिर नीचे करके गर्म जलती हुई, प्रज्वलित, प्रदीप्त, तप्त लोहे की कड़ाही में डाल देते हैं। वह वहां खौलता

हुआ पकता है, वह वहां खौलता हुआ, पकता हुआ फेण के साथ एक बार ऊपर जाता है, एक बार नीचे जाता है, एक बार बीच में रहता है। वह उससे... हो जाता।

"भिक्षुओ, उस आदमी को यमदूत महानरक में डाल देते हैं। उस महानरक के –

"चतुक्कण्णो चतुद्वारो, विभत्तो भागसो मितो।
अयोपाकारपरियन्तो, अयसा पटिकुज्जितो॥

"तस्स अयोमया भूमि, जलिता तेजसा युता।
समन्ता योजनसतं, फरित्वा तिट्ठति सब्बदा"ति॥

["चार कोने हैं और चार द्वार हैं तथा वह हिस्सों में विभक्त है। उसके चारों ओर लोहे की दीवार है और वह लोहे से ढँका हुआ है। उसके चारों ओर सौ योजन लौह-मय भूमि हमेशा आग से प्रज्वलित रहती है।"]

"भिक्षुओ, पूर्व समय में यमराज के मन में यह हुआ –(मनुष्य-) लोक में जो पाप-कर्म करते हैं उन्हें इस प्रकार के बहुत से दंड मिलते हैं। अच्छा हो यदि मुझे मनुष्य होकर पैदा होना मिले, उस समय अर्हत सम्यक संबुद्ध तथागत का भी (मनुष्य-) लोक में जन्म हो, मैं उन भगवान का सत्संग करूं, वे भगवान मुझे धर्मोपदेश दें और मैं उन भगवान के उपदेश को जानूं।

"भिक्षुओ, मैं यह बात किसी दूसरे श्रमण या ब्राह्मण से सुनकर नहीं कहता, बल्कि, भिक्षुओ, जो कुछ मैंने स्वयं जाना है, स्वयं देखा है, स्वयं अनुभव किया है, वही कहता हूं।

"चोदिता देवदूतेहि, ये पमज्जन्ति माणवा।
ते दीघरत्तं सोचन्ति, हीनकायूपगा नरा॥

"ये च खो देवदूतेहि, सन्तो सप्पुरिसा इध।
चोदिता नप्पमज्जन्ति, अरियधम्मे कुदाचनं॥

"उपादाने भयं दिस्वा, जातिमरणसम्भवे।
अनुपादा विमुच्चन्ति, जातिमरणसङ्खये॥

"ते अप्पमत्ता सुखिनो, दिट्ठधम्माभिनिब्बुता।
सब्बवेरभयातीता, सब्बदुक्खं उपच्चगु"न्ति॥

["देवदूतों (जरा, व्याधि, मरण) द्वारा शिक्षित किये जाने पर भी जो मनुष्य प्रमाद करते हैं, वे हीनावस्था को प्राप्त हो, दीर्घकाल तक संताप करते

हैं। जो सत्पुरुष देवदूतों द्वारा शिक्षित किये जाने पर आर्य-धर्म के विषय में कभी प्रमाद नहीं करते, वे जाति-मरण के कारण उपादान-स्कंधों को भय का कारण मान, उपादान-रहित हो जाति-मरण-क्षयस्वरूप निर्वाण को प्राप्त करते हैं। वे कल्याण को प्राप्त होते हैं। वे अप्रमत्त हो सुखी होते हैं। वे इसी जीवन में निर्वाण प्राप्त कर सभी वैरों तथा भयों की सीमा लांघ जाते हैं। वे सभी दुःखों का अतिक्रमण कर लेते हैं।"]

७. चतुर्महाराज सुत्त

३७. "भिक्षुओ, पक्ष की अष्टमी के दिन चारों महाराजाओं के अमात्य-पार्षद इस लोक में यह देखने के लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोक के अधिकांश लोग मातृ-सेवक हैं, पितृ-सेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, ब्राह्मण (क्षीणास्रव)-सेवक हैं, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करने वाले हैं, उपोसथ रखने वाले हैं, जागरण करनेवाले हैं तथा पुण्य-कर्मक रनेवाले हैं।

"भिक्षुओ, पक्ष की चतुर्दशी के दिन चारों महाराजाओं के पुत्र इस लोक में यह देखने के लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोक के अधिकांश लोग मातृ-सेवक हैं, पितृसेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, ब्राह्मण (क्षीणास्रव)-सेवक हैं, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करने वाले हैं, उपोसथ रखने वाले हैं, जागरण करने वाले हैं, तथा पुण्य-कर्मक रने वाले हैं।

"भिक्षुओ, उसी प्रकार पूर्णिमा-उपोसथ के दिन चारों महाराजा स्वयं ही इस लोक में यह देखने के लिए विचरते हैं कि क्या मनुष्य-लोक के अधिकांश लोग मातृ-सेवक हैं, पितृ-सेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, ब्राह्मण (क्षीणास्रव)-सेवक हैं, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करनेवाले हैं, उपोसथ रखने वाले हैं, जागरण करने वाले हैं तथा पुण्य-कर्मक रने वाले हैं।

"भिक्षुओ, यदि मनुष्य-लोक में ऐसे आदमी थोड़े होते हैं जो मातृ-सेवक हों, पितृ-सेवक हों, श्रमण-सेवक हों, ब्राह्मण-सेवक हों, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करनेवाले हों, उपोसथ रखने वाले हों, जागरण करनेवाले हों तथा पुण्य-कर्मक रनेवाले हों, तो भिक्षुओ, वे चारों महाराजा त्रायस्त्रिंश लोक में सुधर्मा सभा में एकत्रित हुए देवताओं को कहते हैं – 'आयुष्मानो! ऐसे आदमी थोड़े हैं जो मातृ-सेवक हैं, पितृ-सेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, ब्राह्मण-सेवक हैं, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करने वाले हैं, उपोसथ रखने वाले हैं, जागरण करनेवाले हैं तथा पुण्य-कर्मक रनेवाले हैं।' भिक्षुओ, उससे त्रायस्त्रिंश देवता असंतुष्ट हो कहते हैं कि देवों की संख्या घटेगी और असुरों की संख्या बढ़ेगी।

"लेकिन भिक्षुओ, यदि मनुष्य-लोक में ऐसे आदमी अधिक होते हैं जो मातृ-सेवक हों, पितृ-सेवक हों, श्रमण-सेवक हों, ब्राह्मण-सेवक हों, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करने वाले हों, उपोसथ रखने वाले हों, जागरण करने वाले हों तथा पुण्य-कर्म करने वाले हों तो भिक्षुओ, वे चारों महाराजा त्रायस्त्रिंश लोक में सुधर्मा सभा में एकत्रित हुए देवताओं को कहते हैं – 'आयुष्मानो! ऐसे आदमी बहुत हैं जो मातृ-सेवक हैं, पितृ-सेवक हैं, श्रमण-सेवक हैं, ब्राह्मण-सेवक हैं, अपने-अपने कुल में बड़ों का आदर करने वाले हैं, जागरण करने वाले हैं तथा पुण्य-कर्म करने वाले हैं।' भिक्षुओ, इससे त्रायस्त्रिंश देवता संतुष्ट हो कहते हैं – 'देव बढ़ते जायेंगे और असुर नष्ट होंगे।'

"भिक्षुओ, पूर्वकाल में त्रायस्त्रिंश देवताओं के देवेंद्र शक्र ने देवों को उद्‌बोधन करते हुए यह गाथा कही –

"चातुद्दसिं पञ्चदसिं, या च पक्खस्स अट्ठमी।
पाटिहारियपक्खञ्च, अट्ठङ्गसुसमागतं।
उपोसथं उपवसेय्य, योपिस्स मादिसो नरो"ति॥

["जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे वह पक्ष की चतुर्दशी, पूर्णिमा, अष्टमी तथा प्रातिहारिय-पक्ष (अतिरिक्त छुट्टी) को आठ शीलों वाला उपोसथ रखे।"]

"भिक्षुओ, देवेंद्र शक्र द्वारा कही गयी यह गाथा सुगीत नहीं है, दुर्गीत है, सुभाषित नहीं है, दुर्भाषित है। यह किसलिए? भिक्षुओ, देवेंद्र शक्र का राग, द्वेष, मोह क्षय नहीं हुआ है। भिक्षुओ, यदि कोई ऐसा भिक्षु जो अर्हत हो, क्षीणास्रव हो, श्रेष्ठ जीवन जी चुका हो, करणीय कर चुका हो, भार उतार चुका हो, सदर्थ प्राप्त कर चुका हो, भव-संयोजन क्षीण कर चुका हो, तथा सम्यक ज्ञान द्वारा विमुक्त हो गया हो, ऐसी गाथा कहे तो उसका यह कथन समुचित होगा –

"चातुद्दसिं पञ्चदसिं, या च पक्खस्स अट्ठमी।
पाटिहारियपक्खञ्च, अट्ठङ्गसुसमागतं।
उपोसथं उपवसेय्य, योपिस्स मादिसो नरो"ति।

["जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे वह पक्ष की चतुर्दशी, पूर्णिमा, अष्टमी तथा प्रातिहारिय-पक्ष (अतिरिक्त छुट्टी) को आठ शीलों वाला उपोसथ रखे।]

"यह किसलिए? क्योंकि भिक्षुओ, वह भिक्षु राग, द्वेष, मोह रहित है।"

८. चतुर्महाराज सुत्त (द्वितीय)

३८. "भिक्षुओ, पूर्वकाल में त्रायस्त्रिंश देवताओं का नेतृत्व करने वाला देवेंद्र शक्र हुआ है। उस समय उसने यह गाथा कही –

'चातुद्दसिं पञ्चदसिं, या च पक्खस्स अट्ठमी।
पाटिहारियपक्खञ्च, अट्ठङ्गसुसमागतं।
उपोसथं उपवसेय्य, योपिस्स मादिसो नरो'ति॥

["जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे वह पक्ष की चतुर्दशी, पूर्णिमा, अष्टमी तथा प्रातिहारिय-पक्ष (अतिरिक्त छुट्टी) को आठ शीलों वाला उपोसथ रखे।"]

"भिक्षुओ, देवेंद्र शक्र द्वारा कही गयी यह गाथा सुगीत नहीं है, दुर्गीत है, सुभाषित नहीं है, दुर्भाषित है। यह किसलिए? क्योंकि भिक्षुओ, देवेंद्र शक्र जन्म, बुढ़ापा, मरण, शोक ,क्रंदन (रोना-पीटना), दुःख, दौर्मनस्य, अशांति से मुक्त नहीं है। मैं कहता हूं कि वह दुःख से मुक्त नहीं है। भिक्षुओ, जो भिक्षु अर्हत हो, क्षीणास्रव हो, श्रेष्ठ जीवन जी चुका हो, करणीय कर चुका हो, भार उतार चुका हो, सदर्थ प्राप्त कर चुका हो, भव-संयोजन क्षीण कर चुका हो तथा सम्यक ज्ञान द्वारा विमुक्त हो गया हो, ऐसी गाथा कहे तो उसका यह कथन समुचित है –

'चातुद्दसिं पञ्चदसिं, या च पक्खस्स अट्ठमी।
पाटिहारियपक्खञ्च, अट्ठङ्गसुसमागतं।
उपोसथं उपवसेय्य, योपिस्स मादिसो नरो'ति।

["जो भी नर मेरे सदृश होना चाहे वह पक्ष की चतुर्दशी, पूर्णिमा, अष्टमी तथा प्रातिहारिय-पक्ष (अतिरिक्त छुट्टी) को आठ शीलों वाला उपोसथ रखे।"]

"यह किसलिए? भिक्षुओ, वह भिक्षु, जन्म, बुढ़ापा, मरण, शोक ,क्रंदन, दुःख, दौर्मनस्य, अशांति से मुक्त है। मैं कहता हूं कि वह दुःख से मुक्त है।"

९. सुकुमार सुत्त

३९. "भिक्षुओ, मैं सुकुमार था, परम सुकुमार, अत्यंत सुकुमार। भिक्षुओ, मेरे पिता के घर पुष्करणियां बनी थीं –एक में उत्पल (नील कमल) पुष्पित होते थे, एक में पद्म (लाल कमल) तथा एक में पुंडरीक (श्वेत कमल)। यह सभी मेरे ही लिए थे। भिक्षुओ, उस समय मैं वह चंदन धारण नहीं करता था जो काशी का न हो, भिक्षुओ, काशी की ही बनी मेरी पगड़ी होती थी, काशी का ही कंचुक ,काशी का ही निवासन (=अंदर पहनने का वस्त्र), काशी

का ही उत्तरासंग। भिक्षुओ, रात-दिन मेरे सिर पर श्वेत-छत्र तना रहता था ताकि मुझे शीत न लगे, गरमी न लगे, धूल न लगे, तिनके न लगें तथा ओस न लगे। भिक्षुओ, उस समय मेरे तीन प्रासाद थे –एक हेमंत-ऋतु के लिए, एक ग्रीष्म-ऋतु के लिए तथा एक वर्षा-ऋतु के लिए। भिक्षुओ, मैं वर्षा के चारों महीने प्रासाद से नीचे नहीं उतरता था। उस समय मैं तूर्य-वादन करने वाली स्त्रियों से घिरा रहता था। भिक्षुओ, जैसे दूसरे घरों में दासों तथा नौकर-चाकरों को बिलङ्ग (एक पौधा जिससे खट्टी दलिया बनायी जाती थी) और कणजक (टूटे चावल का) दिया जाता था, वैसे ही भिक्षुओ, मेरे पिता के घर में दासों तथा नौकर-चाकरों को मांस तथा शाली (=धान) का भात दियाजाता था।

"भिक्षुओ, उस समय इस प्रकार का ऐश्वर्य भोगते हुए तथा इस प्रकार की सुकुमारता लिए हुए मेरे मन में यह हुआ –अज्ञानी सामान्य जन स्वयं जरा को प्राप्त होने वाला होकर, स्वयं जरा के अधीन होकर, किसी दूसरे बूढ़े को देखकर अपनी मर्यादा भूलकर कष्ट पाता है, लज्जित होता है तथा घृणा करता है बिना यह सोचे कि मैं भी तो बुढ़ापे को प्राप्त होने वाला हूं, बुढ़ापे के अधीन हूं। यदि मैं स्वयं बुढ़ापे को प्राप्त होने वाला होकर, स्वयं बुढ़ापे के अधीन होकर दूसरे बूढ़े को देखकर कष्ट पाऊं, लज्जित होऊं, तथा घृणा करूं, तो यह मेरे योग्य न होगा। भिक्षुओ, इस प्रकार विचार करते-करतेमेरे मन में यौवन के प्रति जो यौवन-मद था वह सब जाता रहा।

"अज्ञानी सामान्य जन स्वयं व्याधि को प्राप्त होने वाला होकर, स्वयं व्याधि के अधीन होकर, किसी दूसरे व्याधि-ग्रस्त को देखकर अपनी मर्यादा भूलकर कष्ट पाता है, लज्जित होता है तथा घृणा करता है बिना यह सोचे कि मैं भी तो व्याधि को प्राप्त होने वाला हूं, व्याधि के अधीन हूं। यदि मैं स्वयं व्याधि को प्राप्त होने वाला होकर, स्वयं व्याधि के अधीन होकर, दूसरे व्याधि-ग्रस्त को देखकर कष्ट पाऊं, लज्जित होऊं तथा घृणा करूं, तो यह मेरे योग्य न होगा। भिक्षुओ, इस प्रकार विचार करते-करतेमेरे मन में आरोग्य के प्रति जो आरोग्य-मद था वह सब जाता रहा।

"अज्ञानी सामान्य जन स्वयं मरण को प्राप्त होने वाला होकर, स्वयं मरण के अधीन होकर, किसी दूसरे मृत्यु-प्राप्त को देखकर, अपनी मर्यादा भूलकर कष्ट पाता है, लज्जित होता है तथा घृणा करता है बिना यह सोचे कि मैं भी तो मरण को प्राप्त होने वाला हूं, मरण के अधीन हूं। यदि मैं स्वयं मरण को प्राप्त होने वाला होकर, स्वयं मरण के अधीन होकर, किसी मृत्यु-प्राप्त को देखकर कष्ट पाऊं, लज्जित होऊं तथा घृणा करूं, तो यह मेरे योग्य न होगा। भिक्षुओ,

इस प्रकार विचार करते-करते मेरे मन में जीवन के प्रति जो जीवन-मद था वह सब जाता रहा।

"भिक्षुओ, तीन प्रकार के मद हैं। कौन-से तीन?

"यौवन-मद, आरोग्य-मद तथा जीवन-मद।

"भिक्षुओ, यौवन-मद में मत्त अज्ञानी सामान्य जन कायिक-दुष्कर्म करता है, वाचिक-दुष्कर्म करता है तथा मानसिक-दुष्कर्म करता है। वह शरीर, वाणी तथा मन से दुष्कर्म करके शरीर के छूटने पर, मरने के बाद, अपायगति, दुर्गति में पड़कर नरक में उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, आरोग्य-मद से मत्त अज्ञानी सामान्य जन कायिक-दुष्कर्म करता है, वाचिक ... मानसिक ... करता है। वह शरीर, वाणी तथा मन से ... नरक में उत्पन्न होता है। भिक्षुओ, जीवन-मद से मत्त अज्ञानी सामान्य जन कायिक-दुष्कर्म करता है ... वह शरीर, वाणी तथा मन से ... मरने के बाद ... नरक में उत्पन्न होता है।

"भिक्षुओ, यौवन-मद से मत्त भिक्षु शिक्षा का त्याग कर पतित होता है। भिक्षुओ, आरोग्य-मद से मत्त भिक्षु शिक्षा का त्याग कर पतित होता है। भिक्षुओ, जीवन-मद से मत्त भिक्षु शिक्षा का त्याग कर पतित होता है।

"ब्याधिधम्मा जराधम्मा, अथो मरणधम्मिनो।
यथाधम्मा तथासन्ता, जिगुच्छन्ति पुथुज्जना॥

"अहञ्चे तं जिगुच्छेय्यं, एवंधम्मेसु पाणिसु।
न मेतं पटिरूपस्स, मम एवं विहारिनो॥

"सोहं एवं विहरन्तो, ञत्वा धम्मं निरूपधिं।
आरोग्ये योब्बनस्मिञ्च, जीवितस्मिञ्च ये मदा॥

"सब्बे मदे अभिभोस्मि, नेक्खम्मे दट्ठु खेमतं।
तस्स मे अहु उस्साहो, निब्बानं अभिपस्सतो॥

"नाहं भब्बो एतरहि, कामानि पटिसेवितुं।
अनिवत्ति भविस्सामि, ब्रह्मचरियपरायणो"ति॥

["सामान्य जन स्वयं जरा, व्याधि तथा मरण के अधीन होते हुए भी इस प्रकार के ही दूसरे जनों से घृणा करते हैं। यदि मैं जरा, व्याधि तथा मरण के अधीन प्राणियों से घृणा करूं तो यह मेरे अनुरूप नहीं होगा। उपधि-रहित धर्म (निर्वाण) को जानकर आरोग्य, यौवन तथा जीवनरूपी जो मद हैं उन सब को

मैंने अभिभूत (जीत) कर लिया हैं, नैष्कर्म्य में ही मैंने कल्याण देखा, निर्वाण को पूर्ण रूप से देखा तो मेरे मन में उत्साह है। मैं अब कामभोगों का सेवन करने के योग्य नहीं हूं। मैं अब ब्रह्मचर्य-परायण होकर पीछे न लौटने वाला होऊंगा।"]

१०. अधिपति सुत्त

४०. "भिक्षुओ, तीन आधिपत्य हैं। कौन-से तीन?

"स्वाधिपत्य, लोकाधिपत्य, धर्माधिपत्य।

"भिक्षुओ, स्वाधिपत्य क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, एक भिक्षु अरण्यवासी होकर, अथवा वृक्ष-तले रहने वाला होकर अथवा शून्यागार में रहने वाला होकर इस प्रकार विचार करता है –'न मैं चीवर के लिए घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ, न पिंडपात (=भोजन) के लिए, न शयनासन के लिए, न यह-वह कुछ होने के लिए। मैं जाति, जरा, मरण, शोक, क्रंदन, दुःख, दौर्मनस्य, अशांति में गिरा हुआ हूं –दुःख में गिरा हूं, दुःख में डूबा हुआ। संभव है कि इस दुःखस्कंध का संपूर्ण विनाश देख सकूं। मैं जिस प्रकार के कामभोगों को छोड़कर घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ, वैसे ही कामभोगों के पीछे पड़ूं, तो यह उससे भी बुरा होगा। यह मेरे अनुरूप नहीं है।'

"वह यह विचार करता है –'मेरा प्रयत्न बिना विचलित हुए क्रियाशील होगा, स्मृति निर्भ्रांत हो उपस्थित रहेगी, शरीर प्रश्रब्ध तथा उत्तेजना-रहित रहेगा और चित्त समाहित तथा एकाग्र रहेगा।' वह अपने-आप का ही आधिपत्य स्वीकार कर अकुशल का त्याग करता है, कुशल की भावना करता है, सदोष को छोड़ता है, निर्दोष की भावना करता है –अपने जीवन को शुद्ध बनाता है। भिक्षुओ, इसे स्वाधिपत्य कहते हैं।

"भिक्षुओ, लोकाधिपत्य क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, एक भिक्षु अरण्यवासी होकर, अथवा वृक्ष-तले रहने वाला होकर अथवा शून्यागार में रहने वाला होकर इस प्रकार विचार करता है –'न मैं चीवर के लिए घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ, न पिंडपात (=भोजन) के लिए, न शयनासन के लिए, न यह-वह कुछ होने के लिए। मैं जाति, जरा, मरण शोक, क्रंदन, दुःख, दौर्मनस्य, अशांति में गिरा हुआ हूं –दुःख में गिरा हुआ, दुःख में डूबा हुआ –अच्छा हो कि उस दुःख का संपूर्ण विनाश देख सकूं। इस प्रकार प्रव्रजित हुआ मैं यदि कामभोग संबंधी संकल्प-विकल्पों को मन में जगह दूं, व्यापाद (=क्रोध) संबंधी संकल्प-विकल्पों को मन में जगह दूं;

विहिंसा संबंधी संकल्प-विकल्पों को मन में जगह दूं; तो यह संसार बहुत बड़ा है! इस महान संसार में कुछ श्रमण-ब्राह्मण ऐसे हैं जो ऋद्धिमान हैं, दिव्य चक्षु वाले हैं, दूसरे के मन की बात जान लेने वाले हैं। वे दूर से भी देख लेते हैं, पास होने पर भी दिखाई नहीं देते हैं, वे चित्त से भी चित्त की बात जान लेते हैं। वे भी मेरे बारे में जान लेंगे –इस कुलपुत्र को देखो! यह श्रद्धापूर्वक घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ है, किंतु ऐसा होकर भी यह पापी अकुशल-धर्मों से युक्त हो विहार करता है। कुछ देवता भी हैं जो ऋद्धिमान हैं, दिव्यचक्षुधर हैं तथा पर-चित्त को जान लेने वाले हैं। वे भी मुझे इस प्रकार जान लेंगे –इस कुलपुत्र को देखो! यह श्रद्धापूर्वक घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ है, किंतु ऐसा होकर भी यह पापी अकुशल-धर्मों से युक्त हो विहार करता है।'

"वह यह विचार करता है –'बिना विचलित हुए मेरा प्रयत्न क्रियाशील होगा, स्मृति निर्भ्रांत हो उपस्थित रहेगी, शरीर प्रश्रब्ध तथा उत्तेजना-रहित रहेगा और चित्त समाहित तथा एकाग्र रहेगा।' वह लोक का ही आधिपत्य स्वीकार कर अकुशल का त्याग करता है, कुशल की भावना करता है, सदोष को छोड़ता है, निर्दोष की भावना करता है –अपने जीवन को शुद्ध बनाता है। भिक्षुओ, इसे लोकाधिपत्य कहते हैं।

"भिक्षुओ, धर्माधिपत्य क्या है?

"यहां, भिक्षुओ, एक भिक्षु अरण्यवासी होकर, अथवा वृक्ष-तले रहने वाला होकर अथवा शून्यागार में रहने वाला होकर इस प्रकार विचार करता है –'न मैं चीवर के लिए घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ, न पिंडपात (=भोजन) के लिए, न शयनासन के लिए, न यह-वह कुछ होने के लिए। मैं जाति, जरा, मरण, शोक, क्रंदन, दुःख, दौर्मनस्य, अशांति में गिरा हुआ हूं –दुःख में गिरा हुआ, दुःख में डूबा हुआ। अच्छा हो कि इस दुःख का संपूर्ण विनाश देख सकूं। भगवान का धर्म सु-आख्यात है, सांदृष्टिक (इहलोक-संबंधी) है, अकालिक है, इसके बारे में कहा जा सकता है कि आओ और स्वयं देख लो, निर्वाण की ओर ले जाने वाला है, इसका विज्ञजन (ज्ञानीजन) स्वयं साक्षात कर सकते हैं। मेरे सब्रह्मचारी (साथी) हैं जो जानते हुए, देखते हुए विहार करते हैं। यदि मैं इस प्रकार के सु-आख्यात धर्म-विनय में प्रव्रजित होकर भी आलसी रहूं, प्रमादी रहूं तो यह मेरे अनुरूप नहीं होगा।'

"वह यह विचार करता है –'बिना विचलित हुए मेरा प्रयत्न क्रियाशील होगा, स्मृति निर्भ्रांत हो उपस्थित रहेगी, शरीर प्रश्रब्ध तथा उत्तेजना-रहित रहेगा और चित्त समाहित तथा एकाग्र रहेगा।' वह धर्म का ही आधिपत्य

स्वीकार कर अकुशल का त्याग करता है, कुशल की भावना करता है, सदोष को छोड़ता है, निर्दोष की भावना करता है –अपने जीवन को शुद्ध बनाता है। भिक्षुओ, इसे धर्माधिपत्य कहते हैं। भिक्षुओ, ये तीन आधिपत्य हैं।"

"नत्थि लोके रहो नाम, पापकम्मं पकुब्बतो।
अत्ता ते पुरिस जानाति, सच्चं वा यदि वा मुसा॥

"कल्याणं वत भो सक्खि, अत्तानं अतिमञ्ञसि।
यो सन्तं अत्तनि पापं, अत्तानं परिगूहसि॥

"पस्सन्ति देवा च तथागता च, लोकस्मिं बालं विसमं चरन्तं।
तस्मा हि अत्ताधिपतेय्यको च, लोकाधिपो च निपको च झायी॥

"धम्माधिपो च अनुधम्मचारी, न हीयति सच्चपरक्कमो मुनि।
पसय्ह मारं अभिभुय्य अन्तकं, यो च फुसी जातिक्खयं पधानवा।
सो तादिसो लोकविदू सुमेधो, सब्बेसु धम्मेसु अतम्मयो मुनी"ति॥

["पाप-कर्म करने वाले के लिए लोक में छिपकर काम करने की जगह नहीं है। हे पुरुष! जो कुछ तू अच्छा या बुरा करता है, वह सत्य है या मृषा (मिथ्या) है, यह बात तेरा अपना-आप तो जानता ही है। हे मित्र! तु सुंदर है पर अपने आपका ही अवमान (तिरस्कार) करता है। तू अपने पाप को अपने से ही छिपाता है। लोक में मूर्ख आदमी जो अनुचित कर्म करता है उसे देवता और तथागत देखते हैं। इसलिए निपुण और ध्यानी, स्वाधिपत्य, लोकाधिपत्य, धर्माधिपत्य स्वीकार करने वाला, धर्मानुसार आचरण करने वाला यथार्थ-पराक्रमी मुनि कभी ह्रास को प्राप्त नहीं होता। वह प्रयत्नवान मुनि मार तथा अंतक (यमराज) को पराजित कर जाति-क्षय (निर्वाण) को स्पर्श करता है। इस प्रकार का लोक का जानकार बुद्धिमान मुनि सभी धर्मो (विषयों) की तृष्णा के पार हो जाता है।"]

* * * * *

५. चूळ वर्ग

१. सन्मुखभाव सुत्त

४१. "भिक्षुओ, इन तीन के होने से श्रद्धावान कुलपुत्र बहुत पुण्य कमाता है। किन तीन के ?

"भिक्षुओ, श्रद्धा के होने से श्रद्धावान कुलपुत्र बहुत पुण्य कमाता है। भिक्षुओ, दातव्य (दान देने योग्य)-वस्तु के होने से श्रद्धावान कुलपुत्र बहुत पुण्य कमाता है। भिक्षुओ, दक्षिणा (दान) देने योग्य व्यक्ति के मिलने से श्रद्धावान कुलपुत्र बहुत पुण्य कमाता है।

"भिक्षुओ, इन तीन के होने से श्रद्धावान कुलपुत्र बहुत पुण्य कमाता है।"

२. त्रय स्थानिक सुत्त

४२. "भिक्षुओ, तीन बातों से, श्रद्धावान और प्रसन्नचित्त वाले की पहचान होती है। कौन-सी तीन से?

"वह शीलवानों (सदाचारियों) के दर्शन की इच्छा रखने वाला होता है, वह सद्धर्म सुनने की इच्छा रखने वाला होता है, वह मात्सर्य-रहित होकर गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है, उदारता से दान देने वाला[1], शुद्ध मन से उत्सर्गरत (त्यागकर प्रसन्न होने वाला), जिसके पास याचना की जा सकती है तथा दान का संविभाग करने वाला। भिक्षुओ, इन तीन बातों से श्रद्धावान की, प्रसन्नचित्त की पहचान होती है।

"दस्सनकामो सीलवतं, सद्धम्मं सोतुमिच्छति।
विनये मच्छेरमलं, स वे सद्धोति वुच्चती"ति॥

["शीलवानों का दर्शन करना चाहता है, सद्धर्म सुनना चाहता है, मात्सर्य (कंजूसपन) को दूर करता है – वही श्रद्धावान कहलाता है।"]

३. ध्यातव्य सुत्त

४३. "भिक्षुओ, दूसरों को धर्मोपदेश देने वाले को ये तीन बातें स्पष्ट होनी चाहिए। कौन-सी तीन? जो धर्मोपदेश देता है वह शब्दार्थ तथा भावार्थ दोनों का जानकार होता है, जो धर्मोपदेश सुनता है वह शब्दार्थ तथा भावार्थ दोनों का जानकार होता है, जो धर्मोपदेश देते तथा धर्मोपदेश सुनते हैं वे शब्दार्थ तथा भावार्थ दोनों के जानकार होते हैं। भिक्षुओ, इन तीन बातों का ख्याल कर दूसरों को धर्मोपदेशदेना योग्य है।"

---

१ यहां पालि में **मुत्तचागो पयतपाणि, वोस्सग्गरतो याचयोगो दानसंविभागरतो** वाक्यखंड है। **'मुत्तचागो'** का अर्थ 'उदारतापूर्वक दान देने वाला' होता है; **'पयतपाणि'** का अर्थ 'परिशुद्ध हाथवाला अर्थात शुद्ध मन से दान देने वाला'। **'वोस्सग्गरत'** अर्थात 'उत्सर्गरत' (त्यागकर प्रसन्न होने वाला)। **'याचयोगो'** का अर्थ 'जिसके पास याचना की जा सकती है' अर्थात जो मुक्तहस्त है। **'दानसंविभागरतो'** का अर्थ 'उदारतापूर्वक धन का संविभाग करने वाला, दान देने वाला'।

४. कथाफलसुत्त

४४. "भिक्षुओ, तीन के होने से (धर्म-) कथा लाभकारी होती है।[१] कौन-से तीन? जो धर्मोपदेश देता है वह शब्दार्थ तथा भावार्थ दोनों का जानकार होता है, जो धर्मोपदेश सुनता है वह शब्दार्थ तथा भावार्थ दोनों का जानकार होता है, जो धर्मोपदेश देते तथा धर्मोपदेश सुनते हैं वे शब्दार्थ तथा भावार्थ दोनों के जानकार होते हैं। भिक्षुओ, इन तीन के होने से कथा लाभकारी होती है।"

५. पंडित सुत्त

४५. "भिक्षुओ, इन तीन बातों को पंडितों ने प्रज्ञापित किया है, सत्पुरुषों ने प्रज्ञापित किया है। कौन-सी तीन को?

"भिक्षुओ, दान को पंडितों ने प्रज्ञापित किया है, सत्पुरुषों ने प्रज्ञापित किया है। भिक्षुओ, प्रव्रज्या को पंडितों ने प्रज्ञापित किया है, सत्पुरुषों ने प्रज्ञापित किया है। भिक्षुओ, माता-पिता की सेवा को पंडितों ने प्रज्ञापित किया है, सत्पुरुषों ने प्रज्ञापित किया है। भिक्षुओ, इन तीन बातों को पंडितों ने प्रज्ञापित किया है, सत्पुरुषों ने प्रज्ञापित किया है।

"सब्भि दानं उपञ्ञत्तं, अहिंसा संयमो दमो।
मातापितु उपट्ठानं, सन्तानं ब्रह्मचारिनं॥

"सतं एतानि ठानानि, यानि सेवेथ पण्डितो।
अरियो दस्सनसम्पन्नो, स लोकं भजते सिव"न्ति॥

["सत्पुरुषों ने दान, अहिंसा, संयम तथा दम की प्रशंसा की है और शांत, श्रेष्ठाचरण करने वाले तरुणों द्वारा की जाने वाली माता-पिता की सेवा की प्रशंसा की है। सत्पुरुषों द्वारा प्रशंसित बातों के अनुसार जो पंडित आचरण करता है वह श्रेष्ठ है, वह दर्शनीय है, वह कल्याण को प्राप्त होता है।"]

६. सीलवंत सुत्त

४६. "भिक्षुओ, जिस गांव अथवा निगम के आश्रय में शीलवान प्रव्रजित (भिक्षु) रहते हैं, वहां के रहने वाले तीन तरह से बहुत पुण्य कमाते हैं। कौन-से तीन तरह से?

---

१ यहां कहने का तात्पर्य है कि तीन के होने से कथा लाभकारी होती है। 'कथा शुरू करने की बात' और 'कथा लाभकारी होने की बात' में बड़ा अंतर है। अट्ठकथा में **'पवत्तिनीति अप्पटिहता निय्यानिका'** अर्थात 'बिना रुकावट के निर्वाण की ओर ले जाने वाली है'- यह कहा गया है।

"काया से, वाणी से तथा मन से।

"भिक्षुओ, जिस गांव अथवा निगम के आश्रय में सदाचारी प्रव्रजित (भिक्षु) रहते हैं, वहां के रहने वाले तीन तरह से बहुत पुण्य लाभ कमाते हैं।"

७. संस्कृत-लक्षण सुत्त

४७. "भिक्षुओ, संस्कृत-धर्मों के ये तीन लक्षण हैं। कौन-से तीन?

"उनकी उत्पत्ति (उत्पाद) दिखाई देती है, उनका विनाश (व्यय) दिखाई देता है, उनमें परिवर्तन दिखाई देता है। भिक्षुओ, संस्कृत-धर्मों के ये तीन लक्षण हैं।"

८. असंस्कृत-लक्षण सुत्त

४८. "भिक्षुओ, असंस्कृत-धर्मों के ये तीन लक्षण हैं। कौन-से तीन?

"न उनकी उत्पत्ति दिखाई देती है, न विनाश दिखाई देता है और न उनमें परिवर्तन दिखाई देता है। भिक्षुओ, असंस्कृत-धर्मों के ये तीन लक्षण हैं।"

९. पर्वतराज सुत्त

४९. "भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालय के आश्रित रहते हुए महाशाल वृक्ष तीन तरह से वृद्धि को प्राप्त होते हैं। कौन-से तीन तरह से?

"शाखायें तथा पत्ते बढ़ते हैं, छाल तथा पपड़ी बढ़ती है, फल्गुसार में वृद्धि होती है। भिक्षुओ, पर्वतराज हिमालय के आश्रित रहते हुए महाशाल वृक्ष तीन तरह से वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

"इसी प्रकार भिक्षुओ, श्रद्धावान कुलपति के आश्रय में रहने वाले जनों में तीन बातों की वृद्धि होती है। किन तीन बातों की?

"श्रद्धा की वृद्धि होती है, शील की वृद्धि होती है, तथा प्रज्ञा की वृद्धि होती है। भिक्षुओ, श्रद्धावान कुलपति के आश्रय में रहने वाले जनों में तीन बातों की वृद्धि होती है।

"यथापि पब्बतो सेलो, अरञ्ञस्मिं ब्रहावने।
तं रुक्खा उपनिस्साय, वड्ढन्ते ते वनप्पती॥

"तथेव सीलसम्पन्नं, सद्धं कुलपतिं इध।
उपनिस्साय वड्ढन्ति, पुत्तदारा च बन्धवा।
अमच्चा ञातिसङ्घा च, ये चस्स अनुजीविनो॥

"त्यास्स सीलवतो सीलं, चागं सुचरितानि च।
पस्समानानुकुब्बन्ति, अत्तमत्थं विचक्खणा॥

"इध धम्मं चरित्वान, मग्गं सुगतिगामिनं।
नन्दिनो देवलोकस्मिं, मोदन्ति कामकामिनो"ति॥

["जिस प्रकार घनघोर जंगल में शैल-पर्वत के आश्रय में रहने वाले वृक्ष वृद्धि को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार यहां श्रद्धावान, शीलवान कुलपति के आश्रय में रहने वाले पुत्र-कलत्र, बंधु, अमात्य, जातिसंघ तथा अन्य आश्रित-जन वृद्धि को प्राप्त होते हैं –बुद्धिमान जन उस सदाचारी के शील तथा त्याग का अनुकरण करते हैं। वे सुगतगामियों के मार्ग धर्म के अनुसार आचरण करके इच्छाओं की पूर्ति होने से देव-लोक में प्रसन्न हो मोद को प्राप्त होते हैं।"]

१०. कठोर प्रयत्न करणीय सुत्त

५०. "भिक्षुओ, तीन अवसरों पर कठोर प्रयत्न करना चाहिए। कौन-से तीन?

"जो अनुत्पन्न पाप हैं, अकुशल-धर्म हैं उनके उत्पन्न न होने देने के लिए कठोर प्रयत्न करना चाहिए; जो अनुत्पन्न कुशल-धर्म हैं उनके उत्पन्न करने के लिए कठोर प्रयत्न करना चाहिए, जो दुःख-पूर्ण, तीव्र, प्रखर, कटु, प्रतिकूल, बुरी, प्राणहर शारीरिक वेदनायें हों उन्हें सहन करने का कठोर प्रयत्न करना चाहिए।

"भिक्षुओ, इन तीन अवसरों पर कठोर प्रयत्न करना चाहिए।

"भिक्षुओ, जब भिक्षु, जो अनुत्पन्न पाप हैं, अकुशल-धर्म हैं उनके उत्पन्न न होने देने के लिए कठोर प्रयत्न करता है, जो अनुत्पन्न कुशल धर्म हैं उनके उत्पन्न करने के लिए कठोर प्रयत्न करता है, जो दुःखपूर्ण, तीव्र, प्रखर, कटु, प्रतिकूल, बुरी, प्राणहर शारीरिक वेदनायें होती हैं; उन्हें सहन करने का कठोर प्रयत्न करता है, तो भिक्षुओ, भिक्षु सम्यक प्रकार से दुःख का अंत करने के लिए स्मृतिमान, निपुण प्रयत्नवान कहलाता है।"

११. महाचोर सुत्त

५१. "भिक्षुओ, तीन बातों से समन्वागत (युक्त) महाचोर सेंध भी लगाता है, लूट-मार भी करता है, डाका भी डालता है, रास्ते में भी लूटता (बटमारी करता) है। कौन-सी तीन?

"भिक्षुओ, इस संबंध में महाचोर विषम-आश्रित होता है, गहन-आश्रित होता है तथा बलवान-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, महाचोर विषम-आश्रित कैसे होता है? यहां, भिक्षुओ, महाचोर नदियों के दुर्गम प्रदेश में या दुर्लंघ्य पर्वतों के प्रदेश में रहता है। इस प्रकार भिक्षुओ, महाचोर विषम-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, महाचोर गहन-आश्रित कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, महाचोर घास के गहन जंगल में छिपा होता है, वृक्षों के गहन जंगल में छिपा होता है, वन में छिपा होता है, महावन में छिपा होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, महाचोर गहन-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, महाचोर बलवान-आश्रित कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, महाचोर राजाओं या राजाओं के महामात्यों का आश्रित होता है। उसके मन में होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो ये राजा या राजाओं के महामात्य मेरे बचाव में कुछ कहेंगे। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो ये राजा वा राजाओं के महामात्य उसके बचाव में कुछ कहते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, महाचोर बलवान-आश्रित होता है। भिक्षुओ, इन तीन बातों से समन्वागत (युक्त) महाचोर सेंध भी लगाता है, लूट-मार भी करता है, डाका भी डालता है, रास्ते में भी लूटता है।

"इसी प्रकार, भिक्षुओ, तीन बातों से समन्वागत पापी भिक्षु मूल समेत उखाड़ दिये के समान सत्त्वहीन हो विचरता है (अर्थात मिथ्या-दृष्टि-संपन्न हो जीवन बिताता है), अवगुणी होता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदित होता है तथा बहुत अपुण्य कमाता है। कौन-सी तीन?

"यहां, भिक्षुओ, पापी भिक्षु विषम-आश्रित होता है, गहन-आश्रित होता है तथा बलवान-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, पापी भिक्षु विषम-आश्रित कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, पापी भिक्षु विषम कायिक-कर्मसे समन्वागत होता है, विषम वाचिक-कर्मसे समन्वागत होता है, विषम मानसिक-कर्मसे समन्वागत होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, पापी भिक्षु विषम-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, पापी-भिक्षु गहन-आश्रित कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, पापी भिक्षु मिथ्या-दृष्टि वाला होता है, अतिवादी दृष्टि से समन्वागत। इस प्रकार भिक्षुओ, पापी भिक्षु गहन-आश्रित होता है।

"भिक्षुओ, पापी भिक्षु बलवान-आश्रित कैसे होता है?

"यहां, भिक्षुओ, पापी भिक्षु राजाओं या राजाओं के महामात्यों का आश्रित होता है। उसके मन में होता है कि यदि मुझे कोई कुछ कहेगा तो ये राजा या राजाओं के महामात्य मेरा बचाव करेंगे। यदि उसे कोई कुछ कहता है तो ये राजा या राजाओं के महामात्य उसका बचाव करते हैं। इस प्रकार भिक्षुओ, पापी भिक्षु बलवान-आश्रित होता है। इस प्रकार भिक्षुओ, इन तीन बातों से समन्वागत पापी भिक्षु अपने को स्वयं चोट पहुँचाता है, सदोष होता है, विज्ञ पुरुषों द्वारा निंदित होता है तथा बहुत अपुण्य कमाता है।"

* * * * *